RNI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

GARVI GUJARAT

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 284
दि. 15.02.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

कंबोडिया में साइबर गुलामी के जाल का भंडाफोड़: भारत के संयुक्त अभियान में 520 नागरिकों की सुरक्षित वापसी, अंतरराष्ट्रीय ठगी नेटवर्क पर बड़ी चोट

(जीएनएस)। नई दिल्ली और मुंबई से सामने आई एक बड़ी और राहत देने वाली खबर ने अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराध जगत की भयावह सच्चाई को उजागर कर दिया है। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय, गृह मंत्रालय और महाराष्ट्र साइबर सेल द्वारा कंबोडिया में चलाए गए एक संयुक्त और व्यापक रेस्क्यू ऑपरेशन के तहत 520 भारतीय नागरिकों को साइबर गुलामी के चंगुल से मुक्त कराया गया है। यह कार्रवाई वर्ष 2023 से 2025 के बीच चरणबद्ध तरीके से की गई, जिसमें कंबोडिया में संचालित अवैध साइबर स्कैम सेंटर्स का पर्दाफाश हुआ और वहां फंसे भारतीयों को सुरक्षित स्वदेश वापस लाया गया।

यह मामला केवल एक रेस्क्यू ऑपरेशन नहीं, बल्कि एक ऐसे अंतरराष्ट्रीय अपराध नेटवर्क का खुलासा है, जिसने हजारों युवाओं को सुनहरे भविष्य का सपना दिखाकर उन्हें साइबर गुलामी की अंधेरी दुनिया में धकेल दिया था। इस पूरे अभियान में कंबोडियाई पुलिस और प्रशासन का भी महत्वपूर्ण सहयोग रहा, जिसके कारण इतने बड़े स्तर पर कार्रवाई संभव हो सकी। भारतीय एजेंसियों के कूटनीतिक प्रयासों और लगातार दबाव के बाद कंबोडिया सरकार ने अपने यहां सक्रिय साइबर अपराध गिरोहों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई शुरू की, जिससे इस संगठित अपराध के कई ठिकानों का खुलासा हुआ।

जांच में सामने आया कि इस साइबर गुलामी रैकेट का जाल केवल कंबोडिया तक सीमित नहीं था, बल्कि इसके तार कई देशों से जुड़े हुए थे। अपराधियों ने एक सुनियोजित नेटवर्क तैयार किया था, जिसके तहत भारत सहित कई देशों के युवाओं को पहले आकर्षक नौकरी का झांसा दिया जाता था। पीड़ितों को बताया जाता था कि उन्हें थाइलैंड, कंबोडिया या अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में अच्छी सैलरी और सुविधाओं वाली नौकरी मिलेगी। कई युवाओं ने बेहतर भविष्य और आर्थिक मजबूती की उम्मीद में इन प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया और विदेश रवाना हो गए।

लेकिन जैसे ही वे विदेश पहुंचे, उनकी जिंदगी पूरी तरह बदल गई। एयरपोर्ट से उन्हें सीधे उन परिसरों में ले जाया गया, जहां पहले से ही सख्त सुरक्षा व्यवस्था थी। वहां पहुंचते ही उनके पासपोर्ट और अन्य पहचान दस्तावेज जब्त कर लिए गए, जिससे वे पूरी तरह असहाय हो गए। इसके बाद उन्हें उन साइबर स्कैम सेंटर्स में जबरन काम करने के लिए मजबूर किया गया, जहां उन्हें दिन-रात ऑनलाइन ठगी करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता था।

इन स्कैम सेंटर्स में काम करने वाले भारतीय युवाओं से विभिन्न प्रकार के साइबर अपराध कराए जाते थे। इनमें हनी ट्रैप, फर्जी निवेश योजनाएं, क्रिप्टोकरेंसी फ्रॉड और ऑनलाइन धोखाधड़ी के अन्य तरीके शामिल थे। उन्हें सोशल मीडिया और मैसेजिंग प्लेटफॉर्म के जरिए लोगों को फंसाने के लिए मजबूर किया जाता था। उन्हें नकली पहचान बनाकर लोगों से संपर्क करना पड़ता था और धीरे-धीरे उन्हें विश्वास में लेकर उनसे पैसे ठगने का काम करना होता था। यह पूरी प्रक्रिया बेहद संगठित और योजनाबद्ध तरीके से संचालित होती थी।

सबसे चौंकाने वाली बात यह सामने आई कि इन युवाओं के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था। रेस्क्यू किए गए कई पीड़ितों ने बताया कि यदि वे दिए गए लक्ष्य को पूरा नहीं कर पाते थे या काम करने से इनकार करते थे, तो उन्हें कठोर सजा दी जाती थी। उन्हें बिजली के झटके दिए जाते थे, कई-कई दिनों तक सोने नहीं दिया जाता था और मानसिक व शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता था। कुछ मामलों में तो उनके नाखून तक उखाड़ लिए गए, ताकि वे डरकर अपराध करने के लिए मजबूर हो जाएं। यह पूरी स्थिति किसी जेल या गुलामी से कम नहीं थी।

भारतीय एजेंसियों को जब इस पूरे मामले की जानकारी मिली, तो उन्होंने तुरंत कार्रवाई शुरू की। विदेश मंत्रालय ने कूटनीतिक स्तर पर कंबोडिया सरकार से संपर्क किया और वहां फंसे भारतीय नागरिकों की सुरक्षा और वापसी के लिए सहयोग मांगा। गृह मंत्रालय और महाराष्ट्र साइबर सेल ने तकनीकी जांच शुरू की और इस नेटवर्क से जुड़े लोगों की पहचान करने में जुट गए। लगातार प्रयासों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के बाद कंबोडिया में कई ठिकानों पर छापेमारी की गई।

इस अभियान के तहत अब तक लगभग 200 ठिकानों पर कार्रवाई की जा चुकी है और इस अंतरराष्ट्रीय साइबर रैकेट से जुड़े 173 मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। इन गिरफ्तारियों से यह स्पष्ट हो गया है कि यह कोई छोटा-मोटा गिरोह नहीं था, बल्कि एक बड़ा और संगठित अपराध नेटवर्क था, जो लंबे समय से सक्रिय था। जांच में यह भी सामने आया कि म्यांमार और थाइलैंड की सीमा पर स्थित केके पार्क जैसे स्थान साइबर अपराध के बड़े अड्डे बन चुके थे, जहां विभिन्न देशों के नागरिकों को बंधक बनाकर रखा जाता था।

रेस्क्यू किए गए भारतीय नागरिकों को सुरक्षित भारत वापस लाया गया है और उनकी काउंसलिंग और सहायता की व्यवस्था की गई है। सरकार ने यह भी सुनिश्चित किया है कि पीड़ितों को आवश्यक सहायता और पुनर्वास मिले, ताकि वे सामान्य जीवन में वापस लौट सकें। इस पूरे ऑपरेशन को भारत सरकार की एक बड़ी सफलता माना जा रहा है, क्योंकि इससे न केवल भारतीय नागरिकों की जान बचाई गई, बल्कि एक बड़े अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराध नेटवर्क को भी उजागर किया गया।

इस घटना ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि विदेश में नौकरी के नाम पर मिलने वाले प्रस्तावों को स्वीकार करते समय अत्यधिक सावधानी बरतना आवश्यक है। कई अपराधी संगठनों द्वारा युवाओं को आकर्षक वेतन और बेहतर जीवन का सपना दिखाकर उन्हें अपने जाल में फंसाया जाता है। ऐसे में किसी भी नौकरी के प्रस्ताव को स्वीकार करने से पहले उसकी सत्यता की जांच करना और आधिकारिक माध्यमों से जानकारी प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है।

सरकारी एजेंसियों ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए आगे भी इस तरह के अपराधों के खिलाफ कार्रवाई जारी रखने का संकल्प लिया है। अधिकारियों का कहना है कि इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की पहचान करने और उन्हें गिरफ्तार करने के प्रयास जारी हैं। यह अभियान केवल एक रेस्क्यू ऑपरेशन नहीं, बल्कि साइबर अपराध के खिलाफ एक मजबूत संदेश है कि भारत अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए हर संभव कदम उठाने के लिए प्रतिबद्ध है।

यह ऑपरेशन उन 520 भारतीय परिवारों के लिए उम्मीद और राहत की किरण बनकर आया है, जो अपने प्रियजनों की सुरक्षित वापसी का इंतजार कर रहे थे। इस कार्रवाई ने यह साबित कर दिया है कि अंतरराष्ट्रीय सहयोग और दृढ़ संकल्प के साथ किसी भी बड़े अपराध नेटवर्क को तोड़ा जा सकता है और निर्दोष लोगों को न्याय दिलाया जा सकता है।

तेलंगाना में कांग्रेस का परचम, निकाय चुनाव परिणामों ने बदली सियासी तस्वीर

(जीएनएस)। दक्षिण भारत के महत्वपूर्ण राज्य तेलंगाना में हुए स्थानीय निकाय चुनावों के नतीजों ने राज्य की राजनीति में एक नया संदेश दिया है। इन चुनावों में कांग्रेस ने शानदार प्रदर्शन करते हुए न केवल अपनी संगठनात्मक ताकत का परिचय दिया, बल्कि जनता के बीच अपनी स्वीकार्यता को भी मजबूत रूप से स्थापित किया। चुनाव परिणाम सामने आते ही पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं में उत्साह की लहर दौड़ गई, जबकि कांग्रेस नेतृत्व ने इसे जनता के भरोसे और जनहितकारी नीतियों की जीत बताया।

राजधानी हैदराबाद से लेकर छोटे कस्बों और नगरपालिकाओं तक कांग्रेस के पक्ष में आए जनादेश ने यह संकेत दिया है कि राज्य की जनता स्थानीय स्तर पर बदलाव और विकास की दिशा में पार्टी की नीतियों पर भरोसा जता रही है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी ने इस जीत पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह परिणाम केवल एक चुनावी सफलता नहीं, बल्कि जनता की आकांक्षाओं और विश्वास का प्रतीक है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि तेलंगाना की जनता ने कांग्रेस की “पीपल-फर्स्ट” यानी जनता को प्राथमिकता देने वाली नीतियों को स्वीकार किया है और यह जनादेश सामाजिक न्याय, समानता और समावेशी विकास की दिशा में एक मजबूत कदम है।

राहुल गांधी ने अपने संदेश में यह भी कहा कि कांग्रेस का लक्ष्य “प्रजाला तेलंगाना” यानी जनता का तेलंगाना बनाना है, जहां विकास का लाभ समाज के हर वर्ग और हर परिवार तक पहुंचे। उन्होंने कहा कि पार्टी ने हमेशा आम लोगों की समस्याओं को प्राथमिकता दी है और यही कारण है कि जनता ने कांग्रेस पर भरोसा जताया है। उन्होंने इस जीत का श्रेय पार्टी के समर्पित कार्यकर्ताओं, नेताओं और राज्य की जनता को देते हुए कहा कि यह जीत जमीनी स्तर पर किए गए अथक प्रयासों का परिणाम है। चुनाव आयोग द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, तेलंगाना में 11 फरवरी को 116 नगरपालिकाओं के कुल 2,582 वार्डों में मतदान हुआ था। यह चुनाव राज्य की स्थानीय प्रशासनिक संरचना के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि नगरपालिकाएं सीधे तौर पर नागरिकों की दैनिक जरूरतों और विकास कार्यों से जुड़ी होती हैं। इन चुनावों में कांग्रेस ने 1,300 से अधिक वार्डों में जीत दर्ज कर स्पष्ट बढ़त हासिल की, जो उसके मजबूत जनाधार और प्रभावशाली संगठनात्मक नेटवर्क का प्रमाण है।

वहीं राज्य की प्रमुख क्षेत्रीय पार्टी भारत राष्ट्र समिति, जिसे पहले तेलंगाना राष्ट्र समिति के नाम से जाना जाता था, लगभग 700 वार्डों तक सीमित रही। यह परिणाम पार्टी के लिए एक झटका माना जा रहा है, क्योंकि वह लंबे समय तक राज्य की राजनीति में प्रमुख भूमिका निभाती रही है। दूसरी ओर, भारतीय जनता पार्टी ने भी लगभग 275 वार्डों में जीत दर्ज कर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, हालांकि वह कांग्रेस के मुकाबले काफी पीछे रही।

एआई समिट के कारण बदली न्याय व्यवस्था की लय, सुप्रीम कोर्ट ने अपनाया वर्चुअल सुनवाई का विशेष मॉडल

(जीएनएस)। राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में आयोजित होने जा रहे अंतरराष्ट्रीय स्तर के ‘इंडिया-एआई इम्पैक्ट समिट’ का प्रभाव अब देश की सर्वोच्च न्यायिक संस्था सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया के कामकाज पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। 16 से 20 फरवरी तक राजधानी के प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र भारत मंडपम में होने वाले इस महत्वपूर्ण आयोजन के दौरान संभावित यातायात दबाव और सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने अपनी कार्यप्रणाली में अस्थायी लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव करने का निर्णय लिया है। इस अवधि में अदालत की कार्यवाही हाइब्रिड मोड में संचालित होगी, जिससे अधिवक्ताओं को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अपने मामलों में भाग लेने की सुविधा मिल सकेगी। सुप्रीम कोर्ट द्वारा जारी आधिकारिक सर्कुलर में स्पष्ट किया गया है कि यह निर्णय अधिवक्ताओं की सुविधा और न्यायिक प्रक्रिया की निरंतरता को बनाए रखने के उद्देश्य से लिया गया है। अदालत ने कहा है कि समिट के दौरान भारत मंडपम

और उसके आसपास के क्षेत्रों में भारी भीड़ और कड़े सुरक्षा इंतजामों के कारण ट्रैफिक जाम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, जिससे अधिवक्ताओं और संबंधित पक्षों को अदालत तक पहुंचने में कठिनाई हो सकती है। ऐसे में अदालत ने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया है कि न्यायिक प्रक्रिया बाधित न हो और सभी मामलों की सुनवाई सुचारू रूप से जारी रह सके। यह फैसला सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन की ओर से किए गए अनुरोध के बाद लिया गया। बार एसोसिएशन ने अदालत का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया था कि समिट के कारण शहर में व्यापक यातायात प्रतिबंध और सुरक्षा उपाय लागू किए जाएंगे, जिससे अधिवक्ताओं की भौतिक उपस्थिति प्रभावित हो सकती है। इस पर संज्ञान लेते हुए सुप्रीम कोर्ट प्रशासन ने अधिवक्ताओं को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पेश होने की अनुमति देने का निर्णय लिया।

अदालत ने यह भी स्पष्ट किया है कि वर्चुअल माध्यम से पेश होना पूरी तरह वैकल्पिक होगा और जो अधिवक्ता या पक्षकार व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होना चाहते हैं, वे अदालत में आ सकते हैं। सभी बेंच इस अवधि में हाइब्रिड मोड में काम करेंगी, जिसका अर्थ है कि सुनवाई भौतिक और वर्चुअल दोनों माध्यमों से एक साथ संचालित की जाएगी। इससे न्यायिक पारदर्शिता और प्रक्रिया की निरंतरता दोनों सुनिश्चित की जा सकेगी।

इस फैसले का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यह न्यायपालिका द्वारा तकनीक को अपनाने की दिशा में एक और सकारात्मक कदम है। कोविड-19 महामारी के दौरान सुप्रीम कोर्ट और अन्य अदालतों ने व्यापक स्तर पर वर्चुअल सुनवाई की शुरुआत की थी, जिसने न्याय प्रणाली को नए युग में प्रवेश करने का अवसर दिया। अब एआई समिट जैसे अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के कारण उत्पन्न परिस्थितियों में भी तकनीक का उपयोग कर अदालत ने अपनी कार्यप्रणाली को लचीला और आधुनिक बनाने का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

‘इंडिया-एआई इम्पैक्ट समिट’ स्वयं में एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय आयोजन है, जिसमें 30 से अधिक देशों के हजारों प्रतिनिधियों के शामिल होने की उम्मीद है। इस समिट में कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विभिन्न पहलुओं, उसके सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी प्रभावों तथा भविष्य की संभावनाओं पर व्यापक चर्चा होगी। यह आयोजन भारत को वैश्विक एआई नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण मंच भी माना जा रहा है।

समिट के मद्देनजर राजधानी में सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए गए हैं। दिल्ली पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेंसियों ने लगभग 10,000 से अधिक पुलिसकर्मियों की तैनाती की योजना बनाई है, ताकि कार्यक्रम के दौरान सुरक्षा और यातायात प्रबंधन सुचारू रूप से किया जा सके। इसके साथ ही कई मार्गों पर यातायात प्रतिबंध और डायवर्जन लागू किए जाने की संभावना है, जिससे शहर के प्रमुख इलाकों में आवागमन प्रभावित हो सकता है।

सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय न केवल अधिवक्ताओं और न्यायिक प्रक्रिया के लिए राहत प्रदान करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि भारत की न्यायपालिका समय और परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालने में सक्षम है। वर्चुअल सुनवाई की सुविधा से न केवल समय और संसाधनों की बचत होगी, बल्कि यह न्याय प्रणाली को और अधिक सुलभ और प्रभावी बनाने में भी सहायक सिद्ध होगी।

प्रतिष्ठा, जुनून और इतिहास की टक्कर: कोलंबो में आज फिर आमने-सामने भारत और पाकिस्तान

(जीएनएस)। एशिया की क्रिकेट विरासत में सबसे रोमांचक और भावनात्मक प्रतिद्वंद्विता का एक और अध्याय आज आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप के मंच पर लिखा जाएगा, जब भारत राष्ट्रीय क्रिकेट टीम और पाकिस्तान राष्ट्रीय क्रिकेट टीम की टीमें श्रीलंका की राजधानी कोलंबो के ऐतिहासिक मैदान पर आमने-सामने उतरेंगी। यह मुकाबला सिर्फ दो टीमों के बीच खेला जाने वाला एक मैच नहीं है, बल्कि यह भावनाओं, इतिहास, गौरव और करोड़ों प्रशंसकों की उम्मीदों का संगम है। जब भी भारत और पाकिस्तान क्रिकेट मैदान पर भिड़ते हैं, तो यह सिर्फ खेल नहीं रह जाता, बल्कि यह एक ऐसा अवसर बन जाता है जब पूरे उपमहाद्वीप की धड़कनें एक लय में धड़कने लगती हैं। इस महामुकाबले की महत्ता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि दुनियाभर में लगभग 40 से 50 करोड़ लोग एक साथ इस मैच को देखते हैं। टीवी स्क्रीन, मोबाइल फोन और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर दर्शकों की निगाहें टिकी रहती हैं और हर गेंद, हर रन और हर विकेट के साथ भावनाएं चरम पर पहुंच जाती हैं। खेल विशेषज्ञों का मानना है कि यह मुकाबला विश्व क्रिकेट में सबसे अधिक देखे जाने वाले खेल आयोजनों में से एक है। विज्ञापन, प्रसारण अधिकार और प्रायोजन के जरिए इस मैच से जुड़े आर्थिक पहलू भी विशाल होते हैं, जिनकी कुल कीमत हजारों करोड़ रुपये तक पहुंच जाती है।

क्रिकेट के मैदान पर भारत का पलड़ा ऐतिहासिक रूप से भारी रहा है। अब तक दोनों टीमों के बीच खेले गए कुल 16 मुकाबलों में भारत ने 12 बार जीत दर्ज की है, जबकि पाकिस्तान को केवल चार बार सफलता मिली है। खासकर टी20 विश्व कप में भारत का दबदबा और भी स्पष्ट दिखाई देता है, जहां उसने आठ में से सात मुकाबलों में जीत हासिल की है। पाकिस्तान की एकमात्र जीत 2021 में आई थी, जिसने इस प्रतिद्वंद्विता को और अधिक तीखा बना दिया। इस ऐतिहासिक आंकड़े ने भारतीय टीम के आत्मविश्वास को मजबूत किया है, वहीं पाकिस्तान के लिए यह मुकाबला अपने रिकॉर्ड को बेहतर करने का अवसर है।

आज के मुकाबले से पहले सबसे बड़ा सवाल टीम संयोजन को लेकर बना हुआ है। युवा बल्लेबाज अभिषेक शर्मा की फिटनेस और उनकी अंतिम एकादश में मौजूदगी को लेकर संशय कायम है। टीम प्रबंधन ने अभी तक अपने पत्ते पूरी तरह नहीं खोले हैं, जिससे क्रिकेट प्रशंसकों के बीच उत्सुकता और बढ़ गई है। अभिषेक शर्मा ने हाल के मैचों में शानदार प्रदर्शन किया है और उनकी आक्रामक बल्लेबाजी भारतीय टीम को मजबूत शुरुआत देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

भारतीय टीम की बल्लेबाजी में ईशान किशन एक महत्वपूर्ण कड़ी माने जा रहे हैं। उनकी आक्रामक शैली और तेजी से रन बनाने की क्षमता टीम को शुरुआती बढ़त दिला सकती है। वहीं गेंदबाजी में वरुण चक्रवर्ती का रहस्यमयी स्पिन पाकिस्तान के बल्लेबाजों के लिए चुनौती बन सकता है। उनकी विविधता और सटीकता विरोधी टीम के मध्यक्रम को दबाव में ला सकती है।

पाकिस्तान की ओर से साहिबजादा फरहान और उस्मान तारिख पर विशेष नजरें रहेंगी। फरहान की बल्लेबाजी में स्थिरता और उस्मान की गेंदबाजी में धार पाकिस्तान को मुकाबले में बनाए रखने में अहम भूमिका निभा सकती है। पाकिस्तान की टीम हमेशा से अपने अप्रत्याशित प्रदर्शन के लिए जानी जाती है और बड़े मैचों में वह चौंकाने की क्षमता रखती है।

हालांकि इस महामुकाबले पर मौसम की छाया भी मंडरा रही है। मौसम विभाग ने गरज-चमक के साथ बारिश की संभावना जताई है, जिससे मैच के प्रभावित होने की आशंका बनी हुई है। तेज हवाएं और बादलों की मौजूदगी मैच की परिस्थितियों को चुनौतीपूर्ण बना सकती है। यदि बारिश के कारण मैच रद्द होता है, तो दोनों टीमों को एक-एक अंक मिलेगा, जिससे वे सुपर-8 चरण के लिए क्वालीफाई कर जाएंगी। लेकिन प्रशंसक और खिलाड़ी दोनों ही इस ऐतिहासिक मुकाबले को पूरे 40 ओवर तक देखने की उम्मीद कर रहे हैं।

भारत-पाकिस्तान मैच की खासियत सिर्फ मैदान तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी गहरा प्रभाव डालती है। दोनों देशों में लोग अपने-अपने तरीके से टीम का समर्थन करते हैं। सड़कों पर सन्नाटा छा जाता है, लोग टीवी स्क्रीन के सामने बैठकर हर गेंद का रोमांच महसूस करते हैं। जीत के बाद जश्न और हार के बाद निराशा, दोनों ही भावनाएं पूरे समाज में दिखाई देती हैं।

भारतीय टीम इस मुकाबले में आत्मविश्वास के साथ उतर रही है। हाल के प्रदर्शन और ऐतिहासिक रिकॉर्ड ने टीम को मानसिक बढ़त दी है। कप्तान और कोचिंग स्टाफ ने खिलाड़ियों को दबाव से दूर रखते हुए स्वाभाविक खेल खेलने की सलाह दी है। टीम का लक्ष्य सिर्फ जीत हासिल करना ही नहीं, बल्कि अपने प्रदर्शन से प्रशंसकों की उम्मीदों पर खरा उतरना भी है।

दूसरी ओर पाकिस्तान की टीम भी पूरी तैयारी के साथ मैदान में उतरेगी। उनके लिए यह मुकाबला सिर्फ अंक हासिल करने का अवसर नहीं, बल्कि अपने आत्मसम्मान को साबित करने का भी मौका है। पाकिस्तान के खिलाड़ी जानते हैं कि भारत के खिलाफ जीत उन्हें न केवल टूर्नामेंट में मजबूती देगी, बल्कि उनके प्रशंसकों के दिलों में भी खास स्थान दिलाएगी।

क्रिकेट विशेषज्ञों का मानना है कि इस मुकाबले का परिणाम केवल खिलाड़ियों की तकनीकी क्षमता पर ही निर्भर नहीं करेगा, बल्कि मानसिक मजबूती और दबाव को संभालने की क्षमता भी महत्वपूर्ण होगी।

संपादकीय

गुमशुदाओं की तलाश

पिछले दिनों दिल्ली में अप्रत्याशित रूप से लोगों की गुमशुदगी की घटनाओं ने नीति-नियंताओं व अदालतों समेत पूरे देश का ध्यान खींचा। इस मामले में संज्ञान लेते हुए देश की शीर्ष अदालत ने केंद्र सरकार को इस बात की जांच करने के निर्देश दिए कि देश के विभिन्न इलाकों में बच्चों की लगातार लापता होने की घटनाओं में कहीं किसी देशव्यापी गिरोहों का हाथ तो नहीं है? संकट कितना बड़ा है यह इस बात से पता चलता है कि राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की रिपोर्ट के अनुसार साल 2023 में सारे देश से करीब आठ लाख लोग लापता हुए हैं, जिनमें अधिकांशतः बच्चे, महिलाएं और लड़कियां शामिल रही हैं। जाहिर तौर पर लापता लोगों का बढ़ता आंकड़ा कहीं न कहीं तंत्र की लापरवाही को ही उजागर करता है, जिसके चलते अपराधी-तत्व अपनी साजिशों को अंजाम देने में कामयाब हो जाते हैं। इसी साल जनवरी के पहले पखवाड़े में सिर्फ दिल्ली से आठ सौ लोगों के लापता होने की खबरों ने देशवासियों की चिंताओं को बढ़ाया है। देशवासियों में इस बात को लेकर भी चिंता और नाराजगी है कि इस गंभीर आपराधिक संकट के समाधान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के समन्वय से कोई व्यापक अभियान क्यों नहीं चलाया जाता। विडंबना यह है कि राष्ट्रीय स्तर पर ऐसा कोई प्रामाणिक आंकड़ा उपलब्ध नहीं है, जिससे यह पता चल सके कि राज्यवार कितने लोग वापस लौटे हैं और कितने लोग अभी भी गायब हैं। निश्चित रूप से इस संकट से निपटने के लिए एकीकृत राज्यवार ब्योरा उपलब्ध कराने की जरूरत है। बताया जाता है कि केंद्र सरकार के प्रतिनिधि ने सुप्रीम कोर्ट में इस बात को स्वीकार किया है कि राज्यों से लापता बच्चों और उनसे जुड़े अभियोजन के अंतिम आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। दरअसल, यह पहली बार नहीं है कि शीर्ष अदालत ने लापता बच्चों के आंकड़े जुटाने को कहा हो। कोर्ट ने बीते साल दिसंबर में भी केंद्र सरकार से लापता बच्चों से जुड़े पिछले छह साल के देशव्यापी आंकड़े उपलब्ध कराने को कहा था।

दरअसल, कोर्ट ने इस बाबत राज्य के साथ बेहतर तालमेल स्थापित करके प्रामाणिक जानकारी जुटाने को कहा था। इतना ही नहीं, गुमशुदा बच्चों की तलाश के मामले में नोडल अधिकारियों की नियुक्ति के भी निर्देश दिए गए थे। इस दिशा में अपेक्षित प्रगति का न होना हमारे तंत्र की व्यवस्थागत कमियों को ही उजागर करता है। निर्विवाद रूप से सारे देश से यदि लाखों लोगों के लापता होने के आंकड़े सामने आ रहे हैं, तो बहुत संभव है कि इसके पीछे कोई संगठित गिरोह काम कर रहा होगा। साथ ही यह भी पता लगाने की जरूरत है कि लापता लोगों के मामले में अपराधियों की कारगुजारियों में कहीं एकरूपता तो नहीं है। विगत में मानव तस्करी के मामले गाहे-बगाहे उजागर होते रहे हैं, जिसमें लड़कियों को देह व्यापार के धंधे में धकेलने के भी आरोप लगते रहे हैं। लेकिन इस संकट का समाधान तभी संभव होगा जब देश के सभी राज्यों से प्रामाणिक आंकड़े जुटाए जाएंगे। उनके व्यापक अध्ययन से अपराध करने की वास्तविक तस्वीर सामने आ सकेगी। इसके साथ ही जरूरी है कि राज्य सरकारें भी अपने दायित्व को गंभीरता से निभाएं। इस मामले में किसी भी तरह की कोताही बर्दाश्त न की जाए। इसके अलावा निगरानी के लिए जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही भी सुनिश्चित की जानी चाहिए। देश की कानून-व्यवस्था में भरोसा कायम करने के लिए इन घटनाओं को शासन-प्रशासन के स्तर पर गंभीरता से लिया जाना भी जरूरी है। यहां इस बात की भी पड़ताल होनी चाहिए कि केंद्रीय महिला व बाल विकास मंत्रालय की तरफ से राज्यों में बच्चों की गुमशुदगी के आंकड़े दर्ज करने के लिए जो पोर्टल बनाया गया है, उसमें नियमित रूप से आंकड़े क्यों नहीं दर्ज किए जाते हैं। यह विडंबना है कि सरकारों को जिस दायित्व को अपने स्तर पर ईमानदारी से निभाने की जरूरत होती है, उसके लिये देश की शीर्ष अदालत को बार-बार याद दिलाना पड़ता है। नागरिकों को जागरूक करने के लिए भी सुरक्षा गाइड लाइन्स जारी करने की जरूरत है, जिससे लोग बच्चों की सुरक्षा के लिए सजग व सतर्क रह सकें।

ब्रह्मपुत्र पर प्रोजेक्ट बनाने वाले चीन को मोदी ने दिया जवाब, नदी के नीचे सुरंग बनाने का किया ऐलान

> मोरान बाइपास पर बना 4.2 किमी का सुदृढ़ खंड अब ऐसा राजमार्ग है जो कुछ ही मिनट में सैन्य रनवे में बदल सकता है। विशेष कंक्रीट से बनी यह पट्टी तेज गर्मी और भारी वजन सहने में सक्षम है। इस पर लड़ाकू विमान, भारी परिवहन विमान और हेलिकाप्टर उतर सकते हैं।

मोदी सरकार पूर्वोत्तर को सामरिक और आर्थिक शक्ति का केंद्र मानकर योजनाएं बनाती है और स्वयं प्रधानमंत्री जिस तरह लगातार पूर्वोत्तर क्षेत्र के दौरों के माध्यम से इस क्षेत्र के विकास की गति को रफ्तार देते हैं उसकी बदौलत हाल के वर्षों में यहां की दशा दिशा में बड़ा बदलाव आया है। आज भी असम के डिब्रुगढ़ के पास मोरान बाइपास पर चीन सीमा के करीब बनी आपात लैंडिंग सुविधा पर खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उतर कर बड़ा सामरिक संदेश दिया। साथ ही गोहपुर से नुमालीगढ़ तक प्रस्तावित चार लेन हरित मार्ग और ब्रह्मपुत्र के नीचे सड़क और रेल सुरंग परियोजना मिलकर सुरक्षा, संपर्क और समृद्धि की नई कहानी लिख रहे हैं। यह संयोग नहीं, स्पष्ट रणनीति है। मोरान बाइपास पर बना 4.2 किमी का सुदृढ़ खंड अब ऐसा राजमार्ग है जो कुछ ही मिनट में सैन्य रनवे में बदल सकता है। विशेष कंक्रीट से बनी यह पट्टी तेज गर्मी और भारी वजन सहने में सक्षम है। इस पर लड़ाकू विमान, भारी परिवहन विमान और हेलिकाप्टर उतर सकते हैं। यह दोहरे उपयोग वाली परिसंपत्ति है, जो शांति के समय जन सुविधा और संकट के समय सैन्य ताकत का आधार बनती है। प्रधानमंत्री का खुद इस पट्टी पर उतरना एक प्रतीक भर नहीं था। यह साफ संकेत था कि भारत अपनी सीमा सुरक्षा को लेकर सजग, सक्रिय और आत्मविश्वासी है। संदेश यह भी कि अब भारत पहले से तैयारी रखने वाला देश है। सीमा के पास तेज तैनाती, त्वरित रसद और वैकल्पिक हवाई पट्टियां किसी भी संघर्ष की स्थिति में खेल बदल सकती हैं।

यह सुविधा चीन सीमा से लगभग 300 किमी दूरी पर है। यदि किसी हालात में मुख्य हवाई अड्डे निशाने पर आएं, तो ऐसी पट्टियां वायु सेना को संचालन जारी रखने का विकल्प देती हैं। अलग अलग राजमार्गों पर ऐसे बिंदु बनाकर भारत एक तरह का फैलाव आधारित वायु रक्षा जाल तैयार कर रहा है, जिसे निष्क्रिय करना किसी भी विरोधी के लिए कठिन होगा। इसका महत्व केवल युद्ध तक सीमित नहीं है। बाढ़, भूकंप या किसी आपदा के समय यही पट्टियां राहत का जीवन मार्ग बन सकती हैं। भारी विमान सीधे राहत सामग्री, बचाव दल और चिकित्सा सहायता लेकर दूर दराज इलाकों तक पहुंच सकते हैं। पूर्वोत्तर जैसे संवेदनशील और भौगोलिक रूप से चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में यह क्षमता अमूल्य है। अब बात दूसरी बड़ी पहल की। केंद्र सरकार ने गोहपुर से नुमालीगढ़ तक लगभग 33.7 किमी लंबे चार लेन नियंत्रित हरित मार्ग को मंजूरी दी है। इसकी लागत 18,662 करोड़ रुपए है। इस परियोजना का सबसे साहसिक हिस्सा है ब्रह्मपुत्र के नीचे 15.79 किमी लंबी टिवन ट्यूब सड़क और रेल सुरंग। यह केवल इंजीनियरिंग का कमाल नहीं, रणनीतिक सोच का उदाहरण है।

अभी गोहपुर से नुमालीगढ़ पहुंचने में करीब 240 किमी और छह घंटे लगते हैं। नया मार्ग समय और दूरी दोनों घटाएगा। इससे असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और अन्य राज्यों में माल ढुलाई तेज होगी, लागत घटेगी और व्यापार बढ़ेगा। यह मार्ग कई आर्थिक केंद्र, पर्यटन स्थल, रसद बिंदु, रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डे और जलमार्ग टर्मिनल को जोड़ेगा। अनुमान है कि इससे लाखों मानव दिवस का रोजगार बनेगा।

इस परियोजना का सामरिक अर्थ भी गहरा है। चीन अक्सर ब्रह्मपुत्र पर या उसके आसपास नई जल और ढांचा परियोजनाओं की घोषणा करता रहा है, जिससे निचले क्षेत्रों में चिंता पैदा होती है। ऐसे माहौल में भारत का ब्रह्मपुत्र के नीचे टिवन ट्यूब सुरंग बनाना एक मजबूत संदेश है। भारत दिखा रहा है कि वह नदी को डर या विवाद का विषय नहीं, बल्कि विकास और संपर्क का माध्यम मानता है। नदी के ऊपर ही नहीं, नीचे से भी संपर्क मजबूत किया जा सकता है।

यह कदम यह भी बताता है कि भारत पूर्वोत्तर को स्थायी रूप से देश की मुख्यधारा के ढांचे से जोड़ना चाहता है। तेज सैनिक आवाजाही, बेहतर रसद, मजबूत आर्थिक संपर्क और पर्यटन को बढ़ावा, सब एक साथ साधे जा रहे हैं। यह बहुस्तरीय सोच ही किसी क्षेत्र को हाशिये से केंद्र में लाती है।

सच यह है कि लंबे समय तक पूर्वोत्तर को नीति में उतनी प्राथमिकता नहीं मिली जितनी मिलनी चाहिए थी। कठिन भूगोल और कम आबादी को बहाना बनाया गया। पर अब ढांचा निर्माण की रफ्तार बदली है। सड़क, रेल, हवाई संपर्क और डिजिटल ढांचा, हर दिशा में काम दिखता है। यह बदलाव केवल कागज पर नहीं, जमीन पर दिख रहा है।

मोदी सरकार ने पूर्वोत्तर को रणनीतिक नजर से देखने की नीति अपनाई है। सुरक्षा और विकास को अलग अलग खाने में नहीं, एक साथ रखा गया है। यही कारण है कि रनवे बनी सड़क और नदी के नीचे सुरंग एक ही दौर में दिखती है। यह सोच बताती है कि आने वाले समय में पूर्वोत्तर भारत की सुरक्षा ढाल भी होगा और आर्थिक द्वार भी।

प्रेरणा

मन की तृप्ति का सत्य: साधारण क्षण में छिपा असाधारण आनंद

जीवन में कुछ क्षण ऐसे होते हैं, जो बाहर से देखने में साधारण लगते हैं, लेकिन भीतर से वे हमारी चेतना को गहराई से स्पर्श कर जाते हैं। वे हमें ऐसा सत्य सिखाते हैं, जिसे शब्दों में पूरी तरह व्यक्त करना कठिन होता है। ऐसा ही एक अद्भुत अनुभव विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर के जीवन में तब आया, जब वे आत्मिक शांति और प्रकृति के सान्निध्य को अनुभव करने के लिए हिमालय की यात्रा पर निकले। हिमालय केवल बर्फ से ढके पर्वतों का विस्तार नहीं है, बल्कि वह आत्मा की गहराई में उतरने का मार्ग है। वहाँ की शांति, वहाँ की हवा, और वहाँ का मौन मनुष्य को उसके भीतर के सत्य से मिलाने की क्षमता रखता है।

गुरुदेव का मन प्रकृति के प्रति अत्यंत संवेदनशील था। जब वे ऊँचे पर्वतों, शांत घाटियों और निर्मल आकाश के नीचे चल रहे थे, तो उनके भीतर से स्वतः ही गीतों की धारा प्रवाहित होने लगी। वे बार-बार गुनगुनाने लगते, मानो प्रकृति स्वयं उनके माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति कर रही हो। उनके लिए यह यात्रा केवल भौतिक दूरी तय करना नहीं थी, बल्कि यह उनके भीतर की चेतना की यात्रा थी। जब मनुष्य प्रकृति के इतने निकट होता है, तो उसके भीतर की कृत्रिमता समाप्त होने लगती है और उसका वास्तविक स्वरूप प्रकट होने लगता है। चलते-चलते वे केदारनाथ मंदिर की ओर बढ़ रहे थे। मार्ग कठिन था, और शरीर धीरे-धीरे थकान महसूस करने लगा था। ऊँचाई पर साँस लेना भी कठिन हो जाता है, और लंबे समय तक चलने के बाद शरीर विश्राम की मांग करता है। ऐसे ही एक क्षण में उन्हें एक छोटा सा ढाबा दिखाई दिया। वह स्थान अत्यंत साधारण था, लेकिन उस समय वही उनके लिए विश्राम और राहत का स्थान बन गया। उनके साथ जो सहयोगी थे, वे जानते थे कि गुरुदेव को खिचड़ी बहुत प्रिय है। खिचड़ी उनके लिए केवल भोजन नहीं, बल्कि एक आत्मीय स्वाद था, जो उन्हें घर और अपनत्व की याद दिलाता था। लेकिन उस ढाबे में खिचड़ी उपलब्ध नहीं थी। वहाँ केवल भुने हुए आलू और हरे नमक का साधारण भोजन था, जिसे एक हरे पत्ते में परोसा गया। यह किसी भी दृष्टि से विशेष नहीं था। न उसमें कोई विलासिता थी, न कोई आकर्षण। लेकिन गुरुदेव ने उस भोजन को जिस भाव से स्वीकार किया, वह असाधारण था। उन्होंने उसे अत्यंत आनंद और संतोष के साथ खाना शुरू किया। उनके चेहरे पर प्रसन्नता की एक गहरी झलक थी। वे हर कौर को ऐसे ग्रहण कर रहे थे, जैसे वह कोई दुर्लभ और अनमोल व्यंजन हो।

उनके सहयोगी यह देखकर आश्चर्यचकित थे। वे सोच रहे थे कि जिस व्यक्ति को खिचड़ी इतनी पसंद है, वह इस साधारण भोजन से कैसे इतना संतुष्ट हो सकता है। लेकिन उस समय किसी ने कुछ नहीं कहा। वे केवल उस क्षण को देख रहे थे और अनुभव कर रहे थे। गुरुदेव के भीतर जो संतोष था, वह बाहरी भोजन से नहीं, बल्कि उनके भीतर की स्थिति से उत्पन्न हो रहा था। उनका मन शांत था, और वह वर्तमान क्षण के साथ पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ था।

कुछ समय बाद, जब वे फिर से यात्रा पर आगे बढ़े, तो एक सहयोगी ने साहस करके उनसे पूछा, "गुरुदेव, क्या वास्तव में वह साधारण भुना हुआ आलू आपको इतना स्वादिष्ट लगा?" गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "स्वाद केवल भोजन में नहीं होता, स्वाद हमारे मन में होता है। जब मन संतुष्ट होता है, तो साधारण भोजन भी अमृत के समान लगता है। लेकिन जब मन अशांत होता है, तो सर्वोत्तम भोजन भी संतोष नहीं दे सकता।"

उनका यह उत्तर जीवन का एक गहरा सत्य प्रकट करता है। हम अक्सर सोचते हैं कि सुख बाहरी वस्तुओं में है। हम बेहतर भोजन, बेहतर वस्त्र और बेहतर सुविधाओं की तलाश करते रहते हैं। लेकिन वास्तविक सुख उन वस्तुओं में नहीं, बल्कि हमारे दृष्टिकोण में होता है। यदि हमारा मन शांत और संतुष्ट है, तो हमें हर परिस्थिति में आनंद मिल सकता है। लेकिन यदि हमारा मन अशांत है, तो सबसे अच्छी परिस्थितियाँ भी हमें संतुष्टि नहीं दे सकतीं।

यह अनुभव हमें यह भी सिखाता है कि जीवन का सौंदर्य उसकी सरलता में छिपा हुआ है। आज का मनुष्य जटिलताओं में उलझ गया है। वह सोचता है कि अधिक पाने से उसे अधिक संतोष मिलेगा। लेकिन सच्चाई यह है कि संतोष पाने से ही जीवन सुंदर बनता है। संतोष एक ऐसी अवस्था है, जहाँ मनुष्य जो कुछ है, उसे पूरी तरह स्वीकार करता है और उसके लिए कृतज्ञ होता है।

गुरुदेव का वह क्षण केवल भोजन करने का क्षण नहीं था, बल्कि वह एक ध्यान की अवस्था थी। वे उस समय पूरी तरह वर्तमान में थे। उनका मन न तो अतीत में था और न ही भविष्य में। वे केवल उस क्षण का अनुभव कर रहे थे। यही जागरूकता जीवन का सबसे बड़ा रहस्य है। जब हम हर क्षण को पूरी जागरूकता के साथ जीते हैं, तो जीवन अपने आप सुंदर बन जाता है।

प्रकृति हमें यही सिखाती है कि जीवन में हर चीज का अपना महत्व है। एक साधारण पत्ता, एक साधारण भोजन, और एक साधारण क्षण भी हमें गहरी शांति दे सकता है, यदि हम उसे पूरी जागरूकता के साथ अनुभव करें। लेकिन इसके लिए हमें अपने मन को शांत करना होगा और अपनी अपेक्षाओं को छोड़ना होगा।

अंततः, जीवन का वास्तविक आनंद बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि हमारे भीतर की स्थिति में होता है। जब हमारा मन संतुष्ट होता है, तो हमें हर चीज में सौंदर्य दिखाई देता है। यही सच्ची अनुभूति है, और यही जीवन का वास्तविक सार है। गुरुदेव का यह अनुभव हमें यह सिखाता है कि हमें हर क्षण को प्रेम, कृतज्ञता और जागरूकता के साथ जीना चाहिए, क्योंकि वही क्षण हमारे जीवन को पूर्णता और आनंद से भर सकता है।

साहसी व दृढ़ प्रशासक नहीं, जो व्यवस्था को चुनौती दे सकें

क्या दुनिया में किसी भी खेल का कोई ऐसा बड़ा आयोजन है, जिसमें कोई विवाद न हो? आधुनिक दौर में ऐसा होना लगभग असंभव है, जहां दर्शकों की संख्या और फॉलोअर्स की अहमियत किसी कहानी की सच्चाई से ज्यादा हो गई है। जब भी कोई विश्वस्तरीय आयोजन ऐसे देश में होता है, जो तथाकथित विकसित देशों के साथ अच्छे संबंधों में नहीं होता तो विकसित देशों का मीडिया हर बात पर सवाल उठाने लगता है।

उन्हें आयोजन की मेजबानी का अधिकार कैसे मिला, स्टेडियम तैयार नहीं हैं, मीडिया के लिए सुविधाएं अच्छी नहीं हैं, मौसम खिलाड़ियों के अनुकूल नहीं होगा, खाना, यात्रा, खिलाड़ियों का गांव हर चीज की आलोचना की जाती है। ऐसा लगता है जैसे सिर्फ वही देश विश्व आयोजनों की मेजबानी कर सकते हैं और सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

क्या कभी किसी ने यह सवाल उठाया है कि टेनिस और गोल्फ में सिर्फ चार-चार मेजर ही क्यों होते हैं? गोल्फ में तो चार में से तीन मेजर अमेरिका में ही होते हैं। पहला मेजर अप्रैल की शुरुआत में और आखिरी अगस्त में होता है। यानी सभी गोल्फ मेजर विकसित देशों की गर्मियों के मौसम में ही खेले जाते हैं। चौथे मेजर के बाद और आगस्टा मास्टर्स से पहले के सात महीनों में कम से कम दो या तीन मेजर क्यों नहीं हो सकते? दक्षिण अमेरिका, खाड़ी देश, सुदूर पूर्व या भारतीय उपमहाद्वीप में भी एक मेजर हो सकता है। इसी तरह, यूएस ओपन (सितंबर की शुरुआत) और ऑस्ट्रेलियन ओपन (जनवरी के तीसरे सप्ताह) के बीच टेनिस का एक मेजर क्यों नहीं होता? ऐसा इसलिए नहीं हुआ, क्योंकि इतने साहसी और दृढ़ प्रशासक नहीं हैं, जो व्यवस्था को चुनौती दे सकें।

अब न तो एन. के. पी. साल्वे हैं, न जगमोहन डालमिया और न ही आईएस बिंद्रा, जो तर्कों के साथ यह सवाल उठा सकें कि क्रिकेट विश्व कप सिर्फ इंग्लैंड में ही क्यों होता था। अगर इसे विश्व कप कहा जाता है तो इसे उन सभी देशों में खेला जाना चाहिए जहां क्रिकेट खेला जाता है। इसी सोच ने इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया के दबदबे को तोड़ा। उनकी वीटो शक्ति खत्म हुई और आईसीसी एक सचमुच लोकतांत्रिक संस्था बनी।

आज भारत इस खेल पर राज कर रहा है और इसका कारण है देश में क्रिकेट की जबरदस्त लोकप्रियता, जो ब्रॉडकास्टर्स को भारी-भरकम रकम लगाकर प्रसारण अधिकार खरीदने के लिए प्रेरित करती है। आईसीसी की लगभग 90 फीसदी आय भारतीय कंपनियों या विदेशों में बसे भारतीयों द्वारा संचालित कंपनियों से आती है। इसलिए बीसीसीआई को सही मायनों में बॉस कहा जा सकता है। हालांकि, यह एक उदार बॉस है, क्योंकि तमाम शिकायतों के बावजूद राजस्व का बंटवारा इस तरह किया जाता है, जिससे अन्य सदस्य देशों को भी लाभ मिले।

जब इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया का दबदबा था, तब वे मुख्य रूप से अपने क्रिकेट की ही चिंता करते थे और खेल को अन्य देशों में बढ़ावा देने के लिए बहुत कम करते थे। वे अपनी मर्जी से ही दूसरे देशों का दौरा करते या उन्हें बुलाते थे और उनके शीर्ष खिलाड़ी अक्सर इन दौरों से बचते थे। फिर भी, पुराने प्रभुत्व के कारण उनमें आज भी एक तरह का अधिकार भाव बना हुआ है, खासकर उन देशों के प्रति, जिन्हें वे व्यावसायिक रूप से लाभदायक नहीं मानते।

यही वजह है कि उन्होंने आज तक अपने यहां अफगानिस्तान के विरुद्ध एक भी टेस्ट मैच क्यों नहीं खेला। अफगान खिलाड़ी फ्रेंचाइजी क्रिकेट के लिए तो चुने जाते हैं, लेकिन जब उन्हें द्विपक्षीय सीरीज के लिए बुलाने की बात आती है, तो रवैया बेहद ठंडा और उदासीन रहता है। विश्व कप में तो उन्हें शामिल किया जाता है, लेकिन द्विपक्षीय सीरीज में नहीं। इसलिए जब उनके लोग आज जिम्मेदारी की बात करते हैं तो वह खोखली लगती है और लोग उस पर हंसते हैं।

अभियान

अयोध्या यात्रा का पावन अनुभव: श्रीराम के दर्शन से पहले जानने योग्य संपूर्ण मार्गदर्शिका

भारत की आध्यात्मिक चेतना में कुछ स्थान ऐसे हैं, जिनका महत्व केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि आत्मिक और सांस्कृतिक भी है। उन्हीं पवित्र स्थलों में से एक है अयोध्या, जिसे भगवान श्रीराम की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। सदियों से यह नगरी श्रद्धा, भक्ति और आस्था का केंद्र रही है। जब कोई भक्त पहली बार अयोध्या पहुँचता है और भव्य राम मंदिर के दर्शन करता है, तो उसके भीतर एक अद्भुत शांति और आनंद का अनुभव होता है। यह अनुभव केवल मंदिर के दर्शन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह आत्मा को स्पर्श करता है और जीवन को एक नई दिशा देता है।

आज अयोध्या केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि एक विकसित तीर्थ नगरी बन चुकी है, जहाँ देश और विदेश से लाखों श्रद्धालु प्रतिदिन दर्शन के लिए पहुँचते हैं। यदि आप पहली बार अयोध्या जाने की योजना बना रहे हैं, तो कुछ महत्वपूर्ण बातों को जानना आवश्यक है, ताकि आपकी यात्रा सहज, सुखद और यादगार बन सके। यात्रा की योजना बनाते समय सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि अयोध्या तक पहुँचने के कई किफायती और सुविधाजनक विकल्प उपलब्ध हैं। रेल यात्रा सबसे लोकप्रिय और बजट अनुकूल माध्यम है। भारत के प्रमुख शहरों जैसे दिल्ली, वाराणसी, प्रयागराज और लखनऊ से अयोध्या के लिए नियमित ट्रेनें चलती हैं। ट्रेन यात्रा न केवल आरामदायक होती है, बल्कि यह आपको प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेने का अवसर भी देती है। स्लीपर, एसी और चेयर कार जैसी विभिन्न श्रेणियों में टिकट उपलब्ध होते हैं, जिससे आप अपने बजट और सुविधा के अनुसार चयन कर सकते हैं।

बस यात्रा भी एक अच्छा विकल्प है, विशेष रूप से उन यात्रियों के लिए जो सड़क मार्ग से यात्रा करना पसंद करते हैं। उत्तर प्रदेश परिवहन और निजी बस सेवाएँ नियमित रूप से अयोध्या के लिए संचालित होती हैं। एसी और नॉन एसी बसों की सुविधा उपलब्ध होने से यात्री अपनी आवश्यकताओं के अनुसार यात्रा कर सकते हैं। सड़क मार्ग से यात्रा करने का एक विशेष लाभ यह है कि आप रास्ते में आने वाले विभिन्न धार्मिक और ऐतिहासिक स्थलों का भी दर्शन कर सकते हैं। यदि आप परिवार या मित्रों के साथ यात्रा कर रहे हैं, तो कार से यात्रा करना भी एक अच्छा विकल्प हो सकता है। यह आपको स्वतंत्रता देता है कि आप अपनी सुविधा और समय के अनुसार यात्रा कर सकें।

अयोध्या पहुँचने के बाद सबसे महत्वपूर्ण क्षण होता है श्रीराम मंदिर के दर्शन का। मंदिर परिसर में प्रवेश करते समय कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए मोबाइल फोन, बड़े बैग और अन्य इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं को मंदिर के अंदर ले जाने की अनुमति नहीं होती। इसलिए यात्रा पर निकलते समय यह ध्यान रखें कि आप केवल आवश्यक वस्तुएँ ही साथ रखें। मंदिर परिसर में दर्शन की व्यवस्था अत्यंत सुव्यवस्थित है, जिससे श्रद्धालुओं को बिना किसी असुविधा के दर्शन करने का अवसर मिलता है। सुबह और शाम दोनों समय दर्शन उपलब्ध होते हैं, लेकिन विशेष अवसरों और त्योहारों के दौरान दर्शन का समय बदल सकता है।

जब भक्त मंदिर के गर्भगृह के सामने पहुँचता है और श्रीराम के दिव्य स्वरूप के दर्शन करता है, तो उसका मन स्वतः ही भक्ति से भर जाता है। यह क्षण केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मा और परमात्मा के मिलन का अनुभव होता है। ऐसा लगता है मानो जीवन की सभी चिंताएँ और कष्ट उस एक क्षण में समाप्त हो गए हों। यही अयोध्या की महिमा है, जो हर भक्त के हृदय को शांति और संतोष से भर देती है।

अयोध्या की यात्रा केवल राम मंदिर तक सीमित नहीं है। यहाँ कई अन्य पवित्र स्थल भी हैं, जिनका दर्शन करना अत्यंत शुभ माना जाता है। मंदिर दर्शन के बाद हनुमान गढ़ी जाना विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है। मान्यता है कि हनुमान गढ़ी के दर्शन के बिना राम मंदिर की यात्रा अधूरी रहती है, क्योंकि हनुमानजी अयोध्या के रक्षक माने जाते हैं। यहाँ पहुँचकर भक्त बजरंगबली का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और अपने जीवन की बाधाओं से मुक्ति की प्रार्थना करते हैं।

इसके अतिरिक्त, सरयू नदी के तट पर जाना भी एक अद्भुत अनुभव होता है। सरयू नदी केवल एक जलधारा नहीं, बल्कि यह अयोध्या की आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत है। यहाँ शाम के समय होने वाली आरती में शामिल होना अत्यंत शुभ और भावनात्मक अनुभव होता है। जब दीपों की रोशनी नदी की लहरों पर प्रतिबिंबित होती है और मंत्रों की ध्वनि वातावरण में गूँजती है, तो ऐसा लगता है मानो पूरा वातावरण दिव्यता से भर गया हो। इस क्षण में भक्त अपने भीतर एक गहरी शांति और आनंद का अनुभव करता है।

अयोध्या में दशरथ महल का दर्शन भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह वही स्थान है जहाँ राजा दशरथ निवास करते थे और जहाँ श्रीराम ने अपना बाल्यकाल बिताया था। यहाँ का वातावरण भक्तों को रामायण काल की स्मृतियों से जोड़ देता है और उन्हें उस दिव्य युग की अनुभूति कराता है।

यात्रा को और अधिक सहज बनाने के लिए यह आवश्यक है कि आप पहले से योजना बनाकर चलें। यात्रा के समय मौसम का ध्यान रखना भी महत्वपूर्ण है। सर्दियों में अयोध्या का मौसम ठंडा होता है, जबकि गर्मियों में तापमान अधिक हो सकता है। इसलिए अपने साथ आवश्यक वस्त्र और आवश्यक सामान अवश्य रखें। इसके अलावा, ऑनलाइन माध्यम से दर्शन की जानकारी और भीड़ की स्थिति की जानकारी प्राप्त करना भी उपयोगी होता है।

अयोध्या की यात्रा केवल एक भौतिक यात्रा नहीं, बल्कि यह आत्मिक यात्रा भी है। जब भक्त श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ आता है, तो वह केवल मंदिर के दर्शन नहीं करता, बल्कि वह अपने भीतर छिपी दिव्यता को भी अनुभव करता है। यह यात्रा उसे जीवन के वास्तविक उद्देश्य का बोध कराती है और उसे सच्चे सुख और शांति का मार्ग दिखाती है।

अंततः, अयोध्या की यात्रा हर व्यक्ति के जीवन में एक विशेष स्थान रखती है। यह वह स्थान है जहाँ आस्था, इतिहास और आध्यात्मिकता एक साथ मिलते हैं। जब आप यहाँ आते हैं, तो आप केवल एक शहर में नहीं, बल्कि एक दिव्य अनुभव में प्रवेश करते हैं। श्रीराम के दर्शन से आपका मन और आत्मा दोनों ही संतोष और आनंद से भर जाते हैं। यही अयोध्या की महिमा है, और यही वह अनुभव है, जो हर भक्त को जीवन भर याद रहता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

भारतीय प्रतिभा का वैश्विक परचम: एआई और जीन तकनीक से चिकित्सा जगत में नई क्रांति, लाखों जिंदगियों को मिला जीवनदान

(जीएनएस)। नई दिल्ली। विज्ञान और चिकित्सा के इतिहास में कुछ ऐसे क्षण आते हैं, जब मानव बुद्धि और तकनीक मिलकर पूरी मानवता के भविष्य को बदल देते हैं। वर्ष 2026 ऐसा ही एक ऐतिहासिक पड़ाव लेकर आया है, जब विश्व की प्रतिष्ठित पत्रिका TIME ने स्वास्थ्य क्षेत्र के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची जारी की और इसमें भारतीय मूल के विशेषज्ञों की मजबूत उपस्थिति ने दुनिया को यह संदेश दिया कि भारत केवल जनसंख्या और संस्कृति के मामले में ही नहीं, बल्कि बौद्धिक और वैज्ञानिक शक्ति के रूप में भी विश्व का नेतृत्व कर रहा है। यह सूची केवल नामों की सूची नहीं है, बल्कि यह उन प्रयासों का सम्मान है, जिनके कारण लाखों लोगों को नई जिंदगी मिली है और भविष्य में करोड़ों लोगों को गंभीर बीमारियों से बचाया जा सकेगा। चिकित्सा विज्ञान में सबसे बड़ा परिवर्तन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई के माध्यम से हो रहा है। पहले किसी नई दवा की खोज में वैज्ञानिकों को वर्षों तक प्रयोग करने पड़ते थे। यह प्रक्रिया बेहद महंगी और समय लेने वाली होती थी, और कई बार असफलता भी मिलती थी। लेकिन अब एआई ने इस पूरी प्रक्रिया को बदल दिया है। भारतीय मूल के प्रसिद्ध कैंसर विशेषज्ञ सिद्धार्थ मुखर्जी इस परिवर्तन के अग्रदूत बनकर उभरे हैं। Columbia University से जुड़े इस वैज्ञानिक ने तकनीकी विशेषज्ञ रीड हॉफमैन के साथ मिलकर एक ऐसी एआई प्रणाली विकसित की है, जो लाखों संभावित दवाओं का विश्लेषण कर सकती है और यह बता सकती है कि कौन-सी दवा सबसे प्रभावी होगी। यह प्रणाली केवल छह महीनों के भीतर लाखों वर्चुअल दवाओं का निर्माण करने में सफल रही है। यह उपलब्धि इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे कैंसर जैसी घातक बीमारी के इलाज की प्रक्रिया में क्रांतिकारी तेजी आ सकती है। इसका मतलब यह है कि भविष्य में मरीजों को वर्षों तक नई दवा के इंतजार में नहीं रहना पड़ेगा, बल्कि बहुत कम समय में प्रभावी इलाज उपलब्ध हो सकेगा।

इसी प्रकार जीन तकनीक के क्षेत्र में भारतीय मूल के वैज्ञानिक किरण मुसुनुरु ने एक नई दिशा दिखाई है। उन्होंने CRISPR तकनीक का उपयोग करके उन बच्चों के इलाज की संभावना को साकार किया है, जो जन्म से ही गंभीर आनुवंशिक बीमारियों से पीड़ित होते हैं। पहले ऐसी बीमारियों का कोई स्थायी इलाज नहीं होता था और मरीज को जीवनभर दवाओं और पीड़ा के सहारे जीना पड़ता था। लेकिन अब वैज्ञानिक सीधे उस जीन को ठीक कर सकते हैं, जिसमें दोष है। यह प्रक्रिया मानव जीवन के लिए किसी चमत्कार से कम नहीं है। इससे न केवल मरीज का जीवन बेहतर होता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी उस बीमारी से बचाया जा सकता है। यह चिकित्सा विज्ञान के इतिहास में एक नई क्रांति का संकेत है, जहां बीमारी को जड़ से समाप्त करने की दिशा में कदम बढ़ाया जा रहा है।

स्वास्थ्य सेवाओं में एआई का उपयोग केवल दवा खोज तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सही निदान और उपचार में भी मदद कर रहा है। भारतीय मूल के विशेषज्ञ करण सिंघल ने एआई आधारित स्वास्थ्य परामर्श प्रणाली विकसित की है, जो दुनिया भर के करोड़ों लोगों को चिकित्सा सलाह प्रदान कर रही है। इस प्रणाली की विशेषता यह है कि यह मरीज के मेडिकल रिकॉर्ड का विश्लेषण करके बीमारी का सही अनुमान लगा सकती है और डॉक्टरों को सटीक निर्णय लेने में मदद करती है। इससे इलाज की गुणवत्ता में सुधार हुआ है और मरीजों को समय पर सही उपचार मिल पा रहा है। यह तकनीक विशेष रूप से उन क्षेत्रों में अत्यंत उपयोगी साबित हो रही है, जहां विशेषज्ञ डॉक्टरों की कमी है।

मानव जीवन बचाने के क्षेत्र में भारतीय मूल के वैज्ञानिक नबरुन दासगुप्ता का योगदान भी अत्यंत उल्लेखनीय है। उन्होंने नशीली दवाओं के ओवरडोज से होने वाली मौतों को रोकने के लिए व्यापक अभियान चलाया और 'नलोक्सोन' नामक जीवन रक्षक दवा को लाखों लोगों तक पहुंचाने में मदद की। इस प्रयास के कारण अनुमानित 60 लाख लोगों की जान बचाई जा सकी है। यह उपलब्धि केवल वैज्ञानिक सफलता नहीं है, बल्कि यह मानवता की सेवा का सर्वोच्च उदाहरण है। उन्होंने लोगों को इस दवा के उपयोग की ट्रेनिंग भी दी, जिससे आपातकालीन स्थिति में तुरंत सहायता मिल सके। यह कार्य यह साबित करता है कि विज्ञान का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि मानव जीवन की रक्षा करना है। कैंसर की रोकथाम और समय पर पहचान के क्षेत्र में भारतीय मूल की वैज्ञानिक प्रीति बंडी का कार्य भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने शोध में बताया है कि यदि जोखिम वाले लोगों की नियमित जांच की जाए, तो हजारों लोगों की जान बचाई जा सकती है। कैंसर की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि यह अक्सर देर से पता चलता है, जब इसका इलाज कठिन हो जाता है। लेकिन यदि इसे शुरुआती अवस्था में पहचान लिया जाए, तो इसका सफल इलाज संभव है। उनके शोध ने यह साबित किया है कि सही समय पर जांच और जागरूकता के माध्यम से कैंसर से होने वाली मौतों को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

इन सभी उपलब्धियों का महत्व केवल चिकित्सा क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत की वैश्विक पहचान को भी मजबूत करता है। भारतीय मूल के वैज्ञानिक आज दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित संस्थानों में काम कर रहे हैं और भविष्य की चिकित्सा प्रणाली को आकार दे रहे हैं। यह भारत की शिक्षा प्रणाली, वैज्ञानिक सोच और प्रतिभा का परिणाम है। यह भी दर्शाता है कि भारतीय वैज्ञानिक केवल अपने देश के लिए ही नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए काम कर रहे हैं।

आज दुनिया एक ऐसे दौर से गुजर रही है, जहां नई-नई बीमारियां सामने आ रही हैं और स्वास्थ्य चुनौतियां लगातार बढ़ रही हैं। ऐसे समय में एआई और जीन तकनीक के माध्यम से हो रही यह प्रगति मानवता के लिए एक नई आशा लेकर आई है। भविष्य में ऐसी बीमारियां, जिन्हें आज असाध्य माना जाता है, उनका भी इलाज संभव होगा। इलाज अधिक सटीक, तेज और सस्ता होगा। मरीजों को बेहतर जीवन मिलेगा और स्वास्थ्य सेवाएं अधिक प्रभावी होंगी। भारतीय मूल के इन विशेषज्ञों की उपलब्धियां यह साबित करती हैं कि भारत केवल अतीत की महान सभ्यता नहीं है, बल्कि भविष्य की वैज्ञानिक क्रांति का भी नेतृत्व कर रहा है। यह उपलब्धियां आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा हैं और यह संदेश देती हैं कि ज्ञान, परिश्रम और समर्पण के माध्यम से मानवता के लिए असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है। यह भारत की बौद्धिक शक्ति और वैज्ञानिक क्षमता का प्रमाण है, जिसने पूरी दुनिया में भारत का सम्मान बढ़ाया है और यह विश्वास दिलाया है कि आने वाला समय चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में नई संभावनाओं और नई सफलताओं का होगा।

भावनगर मंडल के चीत्तल रेलवे स्टेशन पर रेलवे कर्मियों की तत्परता से युवती सुरक्षित

(जीएनएस)। दिनांक 13.02.2026 को गाड़ी संख्या 19204 वेरावल–बांद्रा एक्सप्रेस रात्रि 22:55 बजे चीत्तल रेलवे स्टेशन से प्रस्थान कर गई। इसके उपरांत ऑन-ड्यूटी स्टेशन मास्टर श्री राकेश रोशन द्वारा प्लेटफार्म निरीक्षण के दौरान एक युवती को अकेले प्लेटफार्म पर मौजूद पाया गया।

पूछताछ करने पर युवती (निवासी—वेरावल) ने बताया कि वह घर से भागकर आई है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए ऑन-ड्यूटी स्टेशन मास्टर द्वारा तत्क्षण रेलवे सुरक्षा बल (RPF) कंट्रोल सहित सभी संबंधित अधिकारियों को सूचित किया गया तथा महिला हेल्पलाइन नंबर 181 पर कॉल कर सूचना दी गई।

तत्पश्चात महिला हेल्पलाइन 181 के माध्यम से अमरेली सिटी पुलिस को सूचित किया गया। इसके बाद अमरेली से महिला पुलिस मौके पर पहुंची, मामले का संज्ञान लेते हुए आवश्यक पूछताछ की।

युवती के परिजनों से संपर्क कर उन्हें संपूर्ण जानकारी दी गई। परिजनों द्वारा वेरावल से आने का आश्वासन दिया गया तथा उनकी बातचीत अमरेली महिला पुलिस से करवाई गई। समस्त आवश्यक कार्रवाई पूर्ण करने के पश्चात महिला पुलिस युवती को अपने साथ अमरेली ले गई।

डिजिटल जाल में उलझती मासूम ज़िंदगी: कोच्चि की छात्रा की मौत ने खोले साइबर दुनिया के खतरनाक रहस्य

(जीएनएस)। कोच्चि। तकनीक और सोशल मीडिया ने आज की पीढ़ी को दुनिया से जोड़ने का एक आसान माध्यम दिया है, लेकिन यही डिजिटल दुनिया कभी-कभी ऐसी अदृश्य और खतरनाक परतें भी अपने भीतर छिपाए रहती है, जो किशोरों और युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डाल सकती हैं। कोच्चि में सामने आया 16 वर्षीय छात्रा आदित्या की संदिग्ध मौत का मामला अब केवल एक व्यक्तिगत त्रासदी नहीं रह गया है, बल्कि यह आधुनिक डिजिटल समाज की जटिल और खतरनाक वास्तविकताओं को उजागर करने वाला मामला बन गया है। इस घटना ने न केवल परिवार और स्थानीय समुदाय को झकझोर दिया है, बल्कि जांच एजेंसियों को भी यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि क्या सोशल मीडिया और साइबर नेटवर्क के माध्यम से किशोरों को मानसिक रूप से प्रभावित किया जा रहा है।

यह घटना 27 जनवरी की है, जब आदित्या अपने घर से स्कूल जाने के लिए निकली थी। परिवार को उम्मीद थी कि वह रोज की तरह स्कूल से वापस लौटेगी, लेकिन शाम तक उसके घर नहीं लौटने पर चिंता बढ़ गई। बाद में उसका शव घर के पास स्थित एक पत्थर की खदान में मिला। यह खबर सुनते ही पूरे इलाके में शोक और स्तब्धता फैल गई। घटनास्थल से एक कथित सुसाइड नोट भी मिला, जिसमें उसने अपने एक कोरियाई मित्र की मौत का जिक्र करते हुए गहरा भावनात्मक आघात व्यक्त किया था। यह बात सामने आने के बाद जांच का दायरा केवल व्यक्तिगत कारणों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें अंतरराष्ट्रीय डिजिटल संपर्क और सोशल मीडिया गतिविधियों की भी जांच शुरू कर दी गई।

जांच के दौरान सबसे महत्वपूर्ण पहलू एक संदिग्ध इंस्टाग्राम अकाउंट 'ब्लैक वेनम' के रूप में सामने आया, जिसे छात्रा फॉलो कर रही थी। Instagram पर सक्रिय इस अकाउंट की गतिविधियों ने पुलिस का ध्यान आकर्षित किया है। अधिकारियों के अनुसार, इस अकाउंट पर कोरियाई संगीत, भावनात्मक संदेश और ऐसी सामग्री साझा की जाती थी, जो विशेष रूप से किशोरों की भावनाओं को प्रभावित करने के लिए बनाई गई प्रतीत होती है। यह भी पाया गया कि इस अकाउंट के फॉलोअर्स की संख्या अचानक घटना के बाद कम हो गई और कई अकाउंट निष्क्रिय हो गए, जिससे यह संदेह और गहरा हो गया कि यह कोई सामान्य सोशल मीडिया प्रोफाइल नहीं था, बल्कि इसके पीछे संगठित गतिविधि हो सकती है।

साइबर फोरेंसिक जांच में एक और चौंकाने वाला तथ्य सामने आया है। एक मोबाइल फोन, जिसे जांच के लिए जब्त किया गया था, उसमें आठ अलग-अलग इंस्टाग्राम अकाउंट लॉगिन पाए गए। इनमें से कई अकाउंट फर्जी नामों से बनाए गए थे, जिससे उनकी पहचान करना कठिन हो गया है। जांच एजेंसियों को यह भी संदेह है कि इन अकाउंट्स का उपयोग गुमनाम रूप से संवाद करने और भावनात्मक रूप से संवेदनशील किशोरों को प्रभावित करने के लिए किया जा रहा था। इस प्रकार की गतिविधियां साइबर अपराध के एक नए और जटिल स्वरूप को दर्शाती हैं, जहां अपराधी अपनी पहचान छिपाकर डिजिटल माध्यम से मानसिक प्रभाव डालते हैं।

जांच से यह भी संकेत मिला है कि कुछ छात्र स्कूल के नियमों का उल्लंघन करते हुए मोबाइल फोन लेकर आते थे और उनका उपयोग सोशल मीडिया पर गुप्त गतिविधियों के लिए करते थे। यह भी आशंका जताई जा रही है कि कई छात्र बंद ऑनलाइन समूहों में शामिल थे, जहां सांकेतिक भाषा और गुप्त संदेशों के माध्यम से बातचीत की जाती थी। इस प्रकार के डिजिटल नेटवर्क में शामिल लोग अक्सर अपनी पहचान छिपाकर दूसरों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। यह स्थिति विशेष रूप से किशोरों के लिए खतरनाक होती है, क्योंकि इस उम्र में भावनात्मक संवेदनशीलता अधिक होती है और वे बाहरी प्रभावों के प्रति जल्दी प्रतिक्रिया करते हैं।

इस मामले ने केरल पुलिस के सामने नई चुनौतियां भी खड़ी कर दी हैं। पुलिस अब केवल स्थानीय स्तर पर ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी डिजिटल गतिविधियों की जांच कर रही है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से भावनगर में 50 अत्याधुनिक इलेक्ट्रिक बसों का लोकार्पण, प्रधानमंत्री ने असम से दिखाई हरी झंडी

पीएम ई-बस सेवा योजना अंतर्गत गुजरात को भेंट, आगामी समय में राज्य के 8 शहरों में 750 से अधिक ई-बसें चलेंगी

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को असम से 5450 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने पीएम ई-बस सेवा योजना अंतर्गत भावनगर शहर में 50 ई-बसों को हरी झंडी दिखाई।

भारत के शहरों में इलेक्ट्रिक बसों के उपयोग से स्वच्छ, विश्वसनीय तथा टिकाऊ परिवहन को प्रोत्साहन देने के लिए पीएम ई-बस सेवा एक महत्वपूर्ण पहल है। इस योजना के प्रारंभिक चरण में गुजरात के अलावा महाराष्ट्र (नागपुर), चंडीगढ़ तथा असम (गुवाहाटी) में भी बसें आवंटित की गई हैं। राज्य में इस योजना के क्रियान्वयन के लिए गुजरात शहरी विकास मिशन (जीयूडीएम) को गुजरात के शहरी विकास एवं शहरी गृह निर्माण विभाग की राज्य नोडल एजेंसी के रूप में नियुक्त किया गया है। आगामी समय में राज्य के आठ शहरों में इस योजना के अंतर्गत 750 बसें चलाने का आयोजन किया गया है।

भावनगर गुजरात का प्रथम शहर है, जहाँ इस योजना अंतर्गत 50 बसों की भेंट दी गई है। भावनगर में कुल 100 बसों द्वारा नागरिकों के लिए परिवहन सुविधा अधिक सुदृढ़ बनाई जाएगी। ये बसें वातानुकूलित एवं दिव्यांगों के लिए अनुकूल सुविधा से सज्ज हैं। सुरक्षा के दृष्टिकोण से इन बसों में सीसीटीवी कैमरा भी लगाए गए हैं। आगामी समय में राज्य में आठ शहरों में ई-बसें शुरू की जाएंगी; जिनमें वडोदरा में 250, राजकोट में 100, भावनगर में 100, गांधीनगर में 100, जामनगर में 50, जूनागढ में 50, गांधीधाम में 80 तथा नवसारी में 20 ई-बसें चलाई जाएंगी। इलेक्ट्रिक बसों के लिए जरूरी इन्फ्रास्ट्रक्चर तथा तकनीकी सुविधाएँ विकसित करने में गुजरात अग्रणी भूमिका निभा रहा है। समग्र देश में एक एकीकृत प्रयास के हिस्से के रूप में यह पहल पर्यावरणानुकूल परिवहन की दिशा में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

महेसाणा-जगुदन सेक्शन में इंजीनियरिंग कार्य हेतु ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे अहमदाबाद मण्डल के महेसाणा-जगुदन स्टेशनों के बीच ब्रिज नं. 974 एवं 975 के पुनर्निर्माण के संबंध में इंजीनियरिंग कार्य हेतु ब्लॉक लिया गया है। जिसके कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी। जो निम्नानुसार हैः-

पूर्णतः रद्द ट्रेन

दिनांक 17.02.2026 की ट्रेन संख्या 79435/79436 साबरमती-पाटन-साबरमती डेमू रद्द रहेगी।

मार्ग परिवर्तित ट्रेनें

दिनांक 16.02.2026 की 19032 योगनगरी ऋषिकेश-साबरमती एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग महेसाणा-आंबलियासन-कलोल के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया महेसाणा-कटोसण रोड-कलोल के रास्ते चलेगी।

दिनांक 16.02.2026 की 19412 दौलतपुर चौक-साबरमती एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग महेसाणा-आंबलियासन-कलोल के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया महेसाणा-कटोसण रोड-कलोल के रास्ते चलेगी।

रेल यात्रियों से निवेदन है कि उपरोक्त बदलाव को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा प्रारम्भ करें। यात्री ट्रेनों के परिचालन संबंधित नवीनतम अपडेटस की जानकारी के लिए www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते है।

गुजरात को मिली छठी वंदे भारत एक्सप्रेस,असारवा उदयपुर सिटी के बीच शुरू होगी यह प्रतिष्ठित ट्रेन सेवा

(जीएनएस)। भारतीय रेल द्वारा गुजरात में आधुनिक रेल सेवाओं के विस्तार की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए असारवा–उदयपुर सिटी के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस सेवा शुरू की जा रही है। यह गुजरात की छठी वंदे भारत ट्रेन होगी, जो क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को सुदृढ़ करने के साथ-साथ यात्री सुविधा, पर्यटन एवं आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देगी।

भारतीय रेल अपग्रेड किए गए स्टेशनों, नई रेल लाइनों और अत्याधुनिक सुविधाओं के माध्यम से क्षेत्रीय विकास और बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। असारवा–उदयपुर सिटी वंदे भारत एक्सप्रेस इसी प्रतिबद्धता का एक सशक्त उदाहरण है।

यह अत्याधुनिक ट्रेन रिक्लाइनिंग एवं आरामदायक सीटों, स्लाइडिंग दरवाजों, मोबाइल चार्जिंग पॉइंट, बायो-टॉयलेट, स्वचालित प्रवेश एवं निकास द्वार तथा सीसीटीवी कैमरों जैसी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है। यह ट्रेन यात्रियों को विश्वस्तरीय आराम प्रदान करते हुए तेज, सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा का अनुभव देगी।

उद्घाटक सेवा:

ट्रेन संख्या 09663 उदयपुर सिटी-असारवा वंदे भारत एक्सप्रेस 16 फरवरी 2026 को उदयपुर सिटी से 12.25 बजे प्रस्थान करेगी तथा 17.15 बजे असारवा पहुंचेगी। मार्ग में यह ट्रेन जावर, डूंगरपुर और हिम्मतनगर स्टेशनों पर रुकेगी।

नियमित सेवा: (सप्ताह में 6 दिन मंगलवार को छोडकर)

ट्रेन संख्या 26964 असारवा-उदयपुर सिटी वंदे भारत एक्सप्रेस 18 फरवरी 2026 से प्रतिदिन (मंगलवार को छोडकर) असारवा से 17.45 बजे प्रस्थान करेगी तथा 22.00 बजे उदयपुर सिटी पहुंचेगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 26963 उदयपुर सिटी-असारवा वंदे भारत एक्सप्रेस 18 फरवरी 2026 से प्रतिदिन (मंगलवार को छोडकर) उदयपुर सिटी से 06.10 बजे प्रस्थान करेगी तथा 10.25 बजे असारवा पहुंचेगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन हिम्मतनगर, डूंगरपुर तथा जावर स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन में एसी चेयर कार और एक्जीक्यूटिव चेयर कार सहित कुल 8 कोच रहेंगे।

ट्रेन सं. 26964 की बुकिंग 15 फरवरी 2026 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे
अहमदाबाद मण्डल

सिग्नलिंग सामग्री की अंशतः आपूर्ति, प्रतिष्ठापन, परीक्षण एवं प्रवर्तन

निविदा आमंत्रण सूचना सं. - DRM-SnT-ADI-Sig 24 of 2025-26; भारत के राष्ट्रपति की ओर से काम करने वाले DRM/S and T, टेंडर नंबर **DRM-SnT-ADI-Sig 24 of 2025-26 के लिए ई-टेंडर मंगाते हैं, आखिरी तारीख 13.03.2026, 15:00 है।** बिडर्स अपनी ओरिजिनल / रिवाइज्ड बिड्स सिर्फ क्लोजिंग डेट और टाइम तक ही जमा कर पाएंगे, इस टेंडर के लिए मैनुअल ऑफर की इजाज़त नहीं है, और ऐसे किसी भी मैनुअल ऑफर को इग्नोर कर दिया जाएगा। **कार्य का नाम:** अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत गांधीधाम जंक्शन गुड्स शेड में सामान की लोडिंग और अनलोडिंग के लिए गुड्स लाइन नंबर 5 और TY लाइन को पूरी लंबाई तक बढ़ाने के संबंध में सिग्नलिंग सामग्री की अंशतः आपूर्ति, प्रतिष्ठापन, परीक्षण एवं प्रवर्तन का कार्य। **कार्य की अनुमानित कीमत:** ₹ 85,72,143.86/- (₹ पचासी लाख बहत्तर हजार एक सौ तैंतालीस रुपये और छियासी पैसे सिर्फ)। अर्नेस्ट मनी डिपॉजिट: ₹ 1,71,500/- (₹ एक लाख इकहत्तर हजार पांच सौ सिर्फ); **बंद होने की तिथि और समय:** 13.03.2026 को 15:00 बजे के बाद नहीं; **निविदा खुलने की तिथि और समय:** 13.03.2026 को 15:30 बजे खुलेगा। **ई-निविदा की वेबसाइट: www.ireps.gov.in** ADI-275

हमें लाइक करें : facebook.com/WesternRly

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से 'मारी राष्ट्र प्रथमनी कल्पना' पुस्तक का अनावरण

- **'राष्ट्र प्रथम' जीवन जीने की दिशा, केवल राजनीतिक विचार नहीं : मुख्यमंत्री**
- **राष्ट्र निर्माण में प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य : मुख्यमंत्री**

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से शनिवार को अहमदाबाद में नवभारत साहित्य मंदिर प्रकाशित तथा उदय माहुरकर लिखित पुस्तक 'मारी राष्ट्र प्रथमनी कल्पना' (मेरी राष्ट्र प्रथम की कल्पना) पुस्तक का अनावरण किया गया। इस अवसर पर श्री पटेल ने कहा कि भारत देश के नागरिकों को अपनी संस्कृति, परंपरा एवं मूल्यों के प्रति गौरव की भावना होना जरूरी है। उन्होंने विदेश यात्रा के दौरान मातृभाषा में व्यक्त हुए गौरव के अनुभव का उल्लेख करते हुए कहा कि अपनी भाषा तथा संस्कृति ही राष्ट्रीय पहचान की मूल हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि 'राष्ट्र प्रथम' की विचारधारा केवल राजनीतिक नारा नहीं, बल्कि जीवन जीवन जीने की दिशा है। जीवमात्र में परमात्मा का अंश बसता है। इसलिए व्यक्ति को अपने जीवन में सकारात्मक मूल्यों को अपनाकर राष्ट्र निर्माण में रचनात्मक भागीदारी दर्ज करानी चाहिए। उन्होंने कहा कि समाज एवं राष्ट्र के हित को प्राथमिकता देने वाली विचारधारा द्वारा ही समृद्ध तथा सशक्त भारत का निर्माण संभव होता है। श्री भूपेंद्र पटेल ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के विजन का उल्लेख करते हुए देश की एकता, अखंडता एवं सांस्कृतिक विविधता में एकरूपता को भारत की सबसे बड़ी शक्ति बताया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र के साथ सर्वांगीण विकास के लिए प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है।

इस अवसर पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री के दृढ़ नेतृत्व में आयोजित 'सोमनाथ स्वाभिमान यात्रा' देशप्रेम तथा सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक बनी है। सोमनाथ का इतिहास केवल धार्मिक आस्था का नहीं, अपितु राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक है।

इस कार्यक्रम में पूज्य श्री ज्ञानवत्सल स्वामी ने भी प्रासंगिक संबोधन किया। पुस्तक के लेखक उदय माहुरकर ने पुस्तक की विषयवस्तु के बारे में जानकारी देते हुए 'राष्ट्र प्रथम' की भावना को जीवन में आत्मसात करने की अपील की।

कार्यक्रम में प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष श्री भरतभाई पंड्या, पूर्व शिक्षा मंत्री श्री भूपेंद्रसिंह चुडासमा, विधायक, साहित्यकार तथा साहित्यप्रेमी उपस्थित रहे।

पंजाब की टारगेट किलिंग का सच सामने लाने की दिशा में बड़ा कदम, एनआईए अदालत में गवाहों के बयान दर्ज

(जीएनएस)। नई दिल्ली। वर्ष 2016 और 2017 के दौरान पंजाब में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिंदू संगठनों से जुड़े नेताओं की हुई सिलसिलेवार हत्याओं ने पूरे देश को झकझोर दिया था। इन घटनाओं को लेकर शुरू हुई जांच अब एक महत्वपूर्ण मोड़ पर पहुंच गई है। राजधानी स्थित पटियाला हाउस कोर्ट में विशेष राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) अदालत के समक्ष इस बहुचर्चित टारगेट किलिंग मामले में संरक्षित गवाहों के बयान दर्ज किए गए हैं। इस घटनाक्रम को जांच और न्यायिक प्रक्रिया के लिहाज से बेहद अहम माना जा रहा है, क्योंकि गवाहों के बयान इस पूरे नेटवर्क और साजिश की परतें खोलने में निर्णायक साबित हो सकते हैं।

विशेष अदालत में पेशी के दौरान हरदीप सिंह उर्फ शेरा, रमनदीप सिंह उर्फ बग्गा, ब्रिटेन नागरिक जगतार सिंह जोहल उर्फ जग्गी, मनप्रीत सिंह और अमनिंदर सिंह सहित कई आरोपियों को अदालत के सामने प्रस्तुत किया गया। इस मामले में कुल 14 आरोपियों के खिलाफ गंभीर आरोप लगाए गए हैं, जिनमें हत्या, आपराधिक साजिश और गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम यानी यूएपीए के तहत मुकदमा दर्ज है। अदालत में अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश प्रशांत शर्मा की अध्यक्षता में सुनवाई के दौरान एनआईए ने एक महत्वपूर्ण संरक्षित गवाह का बयान दर्ज कराया, जिसे मामले की सच्चाई तक पहुंचने के लिए एक अहम कड़ी माना जा रहा है।

इन हत्याओं की श्रृंखला ने उस समय पंजाब में भय और असुरक्षा का माहौल पैदा कर दिया था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े कई प्रमुख नेताओं और हिंदू संगठनों के पदाधिकारियों को निशाना बनाकर गोली मार दी गई थी। इन घटनाओं के पीछे एक सुनियोजित साजिश होने का संदेह जताया गया था, जिसके बाद जांच की जिम्मेदारी राष्ट्रीय जांच एजेंसी को सौंपी गई। राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने मामले की गहराई से जांच शुरू की और धीरे-धीरे इस नेटवर्क से जुड़े

कई संदिग्धों को गिरफ्तार किया गया।

जांच एजेंसी के अनुसार, यह केवल व्यक्तिगत दुश्मनी या स्थानीय विवाद का मामला नहीं था, बल्कि इसके पीछे एक संगठित और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैला नेटवर्क सक्रिय था। एजेंसी का दावा है कि इस नेटवर्क के कुछ सदस्य विदेशों में बैठकर साजिश को अंजाम देने में सहयोग कर रहे थे। विशेष रूप से ब्रिटेन के नागरिक जगतार सिंह जोहल की भूमिका को लेकर कई महत्वपूर्ण खुलासे सामने आए हैं। जांच के दौरान यह आरोप सामने आया कि उन्होंने वर्ष 2013 में पेरिस जाकर हथियार खरीदने के लिए हरमिंदर सिंह मिंटू को तीन हजार पाउंड की राशि दी थी। यह आरोप इस बात की ओर संकेत करता है कि इस साजिश की जड़ें अंतरराष्ट्रीय स्तर तक फैली हुई थीं।

आरोपियों के अधिवक्ता जसपाल सिंह मंजपुर ने अदालत को बताया कि उनके मुवक्किल वर्ष 2017 से न्यायिक हिरासत में हैं और इस मामले की सुनवाई लंबे समय से चल रही है। उन्होंने यह भी कहा कि मामला पहले पंजाब में चल रहा था, लेकिन बाद में सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर इसे दिल्ली की एनआईए अदालत में स्थानांतरित कर दिया गया। इस निर्णय का उद्देश्य सुनवाई को निष्पक्ष और सुरक्षित वातावरण में पूरा करना था, ताकि किसी भी प्रकार के दबाव या बाधा से बचा जा सके।

चार फरवरी से इस मामले की नियमित सुनवाई शुरू हो चुकी है और अब तक दो संरक्षित गवाहों के बयान दर्ज किए जा चुके हैं। संरक्षित गवाहों की पहचान और सुरक्षा को लेकर विशेष सावधानी बरती जा रही है, क्योंकि इस प्रकार के मामलों में गवाहों को अक्सर खतरे का सामना करना पड़ता है। अदालत ने इस प्रक्रिया को तेज करने के निर्देश दिए हैं, ताकि न्याय में अनावश्यक देरी न हो और पीड़ित परिवारों को जल्द न्याय मिल सके। इस मामले की अगली सुनवाई 16 फरवरी को निर्धारित की गई है, जिसमें और गवाहों के बयान दर्ज किए जाने की संभावना है। इसके अलावा सुप्रीम कोर्ट ने एनआईए को निर्देश दिया है कि वह संरक्षित गवाहों के साक्ष्य से संबंधित रिपोर्ट 24 फरवरी तक प्रस्तुत करे। वहीं, आरोपियों की जमानत याचिका पर अगली सुनवाई 24 मार्च को होगी। इन तिथियों को लेकर सभी पक्षों की निगाहें अदालत की कार्यवाही पर टिकी हुई हैं।

इस पूरे मामले ने देश में कानून व्यवस्था और आंतरिक सुरक्षा को लेकर कई महत्वपूर्ण सवाल खड़े किए हैं। टारगेट किलिंग की घटनाएं केवल व्यक्तिगत अपराध नहीं होतीं, बल्कि वे समाज में भय और अस्थिरता पैदा करने का प्रयास होती हैं। ऐसे मामलों में साजिशकर्ता अक्सर संगठित नेटवर्क का उपयोग करते हैं, जिसमें स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई लोग शामिल होते हैं। यही कारण है कि इस मामले की जांच को राष्ट्रीय स्तर की एजेंसी को सौंपा गया और इसे गंभीरता से लिया गया।

पीड़ित परिवारों के लिए यह मामला केवल एक कानूनी प्रक्रिया नहीं, बल्कि न्याय की उम्मीद का प्रतीक है। कई परिवार वर्षों से अपने प्रियजनों की हत्या के दोषियों को सजा दिलाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। अदालत में गवाहों के बयान दर्ज होने से उन्हें उम्मीद जगी है कि अब न्याय की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ेगी और दोषियों को उनके अपराध की सजा मिलेगी।

यह मामला भारत की न्यायिक प्रणाली और जांच एजेंसियों की प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है। लंबे समय तक चली जांच, आरोपियों की गिरफ्तारी और अदालत में सुनवाई यह दिखाती है कि कानून का शासन कायम रखने के लिए संस्थाएं लगातार प्रयासरत हैं। साथ ही, यह भी स्पष्ट होता है कि आतंक और हिंसा के जरिए समाज में भय फैलाने की कोशिश करने वालों को अंततः न्याय का सामना करना पड़ता है।

अब पूरे देश की नजरें आने वाली सुनवाई पर टिकी हुई हैं। अदालत में प्रस्तुत किए जाने वाले साक्ष्य और गवाहों के बयान इस मामले की दिशा तय करेंगे। यह केवल एक आपराधिक मामला नहीं है, बल्कि यह न्याय, सुरक्षा और कानून के शासन की परीक्षा भी है। आने वाले दिनों में अदालत का फैसला न केवल पीड़ित परिवारों के लिए न्याय सुनिश्चित करेगा, बल्कि यह भी संदेश देगा कि कानून के सामने कोई भी अपराधी बच नहीं सकता।

रेलवे में सफाई क्रांति की शुरुआत, अब जनरल कोच भी रहेंगे चमचमाते, एआई करेगा हर घंटे निगरानी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारतीय रेलवे में सफाई व्यवस्था को लेकर एक ऐतिहासिक और व्यापक सुधार की शुरुआत होने जा रही है, जिसके तहत अब केवल एसी कोच ही नहीं बल्कि जनरल कोच की भी हर घंटे सफाई सुनिश्चित की जाएगी। यह कदम रेलवे रिफॉर्म प्लान 2026 के अंतर्गत उठाया गया है, जिसमें 52 हफ्तों में 52 बड़े सुधार लागू करने का लक्ष्य तय किया गया है। इस महत्वाकांक्षी योजना के जरिए यात्रियों को अधिक स्वच्छ, सुरक्षित और आरामदायक यात्रा अनुभव प्रदान करने की दिशा में ठोस पहल की जा रही है। रेलवे मंत्रालय का मानना है कि सफाई और यात्री सुविधा रेलवे की प्राथमिक जिम्मेदारी है और इसे सर्वोच्च स्तर पर सुनिश्चित किया जाएगा।

रेल मंत्री ने इस योजना की घोषणा करते हुए कहा कि सुधार योजना के पहले चरण में ट्रेनों की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। लंबे समय से यात्रियों की शिकायत रही है कि जनरल कोचों में सफाई की स्थिति संतोषजनक नहीं होती, जिससे यात्रा असुविधाजनक हो जाती है। इस समस्या को ध्यान में रखते हुए अब सफाई व्यवस्था को पूरी तरह से नया स्वरूप दिया जा रहा है। इसके तहत हर जोन की 4 से 5 ट्रेनों को शुरुआती चरण में शामिल किया जाएगा और उसके बाद चरणबद्ध तरीके से इस व्यवस्था को देशभर की लंबी दूरी की करीब 80 ट्रेनों में लागू किया जाएगा। इस नई व्यवस्था में एसी कोचों के साथ-साथ जनरल कोचों को भी समान प्राथमिकता दी जाएगी, जिससे हर वर्ग के यात्रियों को समान स्तर की सुविधा मिल सके।

इस अभियान के तहत ट्रेन के टॉयलेट, डस्टबिन, फर्श, सीट और अन्य सभी हिस्सों की नियमित और व्यवस्थित सफाई सुनिश्चित की जाएगी। इसके साथ ही कोचों में मौजूद किसी भी तकनीकी या मैकेनिकल समस्या की भी जांच की जाएगी, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। रेलवे ने यह भी स्पष्ट किया है कि सफाई केवल औपचारिक प्रक्रिया नहीं होगी, बल्कि इसे सख्ती से लागू किया जाएगा और इसकी निगरानी आधुनिक तकनीक के माध्यम से की जाएगी।

इस पूरी व्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई की होगी। रेलवे ने सफाई व्यवस्था की निगरानी के लिए एआई आधारित सिस्टम लागू करने का निर्णय लिया है, जिसके तहत कोचों की तस्वीरें और वीडियो कंट्रोल रूम में भेजे जाएंगे। इन तस्वीरों का विश्लेषण एआई सिस्टम द्वारा किया जाएगा, जिससे यह पता चल सकेगा कि सफाई मानकों का पालन हो रहा है या नहीं। यदि किसी कोच में गंदगी पाई जाती है या सफाई में लापरवाही सामने आती है, तो संबंधित वेंडर या एजेंसी के खिलाफ तुरंत कार्रवाई की जाएगी। इससे जवाबदेही सुनिश्चित होगी और सफाई व्यवस्था में पारदर्शिता आएगी।

रेलवे मंत्रालय ने यह भी स्पष्ट किया है कि इस नई व्यवस्था के लागू होने से रेलवे पर अतिरिक्त वित्तीय बोझ जरूर पड़ेगा, लेकिन इसका असर यात्रियों के किराए पर नहीं पड़ेगा। यात्रियों से अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जाएगा और सफाई की बेहतर सुविधा उन्हें बिना किसी अतिरिक्त लागत के उपलब्ध कराई जाएगी। यह निर्णय रेलवे की यात्री-हितैषी नीति को दर्शाता है, जिसमें सुविधा और गुणवत्ता को प्राथमिकता दी जा रही है।

इस अभियान को सफल बनाने के लिए रेलवे अतिरिक्त कर्मचारियों की नियुक्ति भी करेगा। पीक आवर के दौरान सफाई व्यवस्था को मजबूत बनाए रखने के लिए विशेष टीमों की तैनाती की जाएगी। ये टीमें तय रूट पर लगातार सफाई कार्य करती रहेंगी और यह सुनिश्चित करेंगी कि ट्रेन के सभी कोच हर समय स्वच्छ रहें। यदि किसी कारण से जनरल कोच एआई सिस्टम से कनेक्ट नहीं हो पाता है, तो स्टाफ खुद ट्रेन से उतरकर कोच की सफाई करेगा। यह व्यवस्था इस बात का संकेत है कि रेलवे इस अभियान को केवल तकनीकी स्तर पर नहीं, बल्कि जमीनी स्तर पर भी पूरी गंभीरता से लागू करना चाहता है।

रेलवे ने सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए एक इंटीग्रेटेड मॉनिटरिंग सिस्टम भी विकसित किया है, जो सफाई कार्यों की पूरी प्रक्रिया पर नजर रखेगा। इस सिस्टम के माध्यम से कंट्रोल रूम से ही सफाई की स्थिति का आकलन किया जा सकेगा और जरूरत पड़ने पर तुरंत सुधारात्मक कदम उठाए जा सकेंगे। इससे सफाई व्यवस्था में निरंतरता बनी रहेगी और किसी भी प्रकार की लापरवाही को तुरंत रोका जा सकेगा।

इस नई पहल से यात्रियों को न केवल स्वच्छ वातावरण मिलेगा, बल्कि रेलवे की छवि में भी सकारात्मक बदलाव आएगा। लंबे समय से रेलवे में सफाई एक चुनौतीपूर्ण विषय रहा है, लेकिन अब आधुनिक तकनीक और सख्त निगरानी के माध्यम से इसे प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया जाएगा। यह पहल भारत के रेलवे सिस्टम को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

रेलवे अधिकारियों का मानना है कि यह सुधार केवल सफाई तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इससे यात्रियों के अनुभव में व्यापक सुधार होगा। स्वच्छ कोच, साफ टॉयलेट और बेहतर रखरखाव से यात्रियों की संतुष्टि बढ़ेगी और रेलवे में उनका भरोसा मजबूत होगा। इसके साथ ही सफाई कर्मचारियों और वेंडरों के बीच भी जिम्मेदारी और अनुशासन की भावना विकसित होगी, क्योंकि अब उनके काम की निगरानी आधुनिक तकनीक के जरिए की जाएगी।

गुजरात के आदिवासी अंचलों को नई रफ्तार, एनएच-56 के चार लेन विस्तार से विकास और कनेक्टिविटी को मिलेगा ऐतिहासिक बढ़ावा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और दूरदराज के क्षेत्रों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में केंद्र सरकार ने एक और महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। सरकार ने गुजरात में नेशनल हाईवे-56 के धामसिया-बिटाडा-मोवी और नासरपुर-मालोथा खंडों को चार लेन में विकसित करने की महत्वाकांक्षी परियोजना को मंजूरी दे दी है। कुल 107.67 किलोमीटर लंबी इस परियोजना पर 4,583.64 करोड़ रुपये की लागत आने का अनुमान है। इस फैसले को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति की बैठक में स्वीकृति दी गई, जिसे देश के पश्चिमी और आदिवासी क्षेत्रों में कनेक्टिविटी सुधारने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है। सूचना और प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इस फैसले की जानकारी देते हुए कहा कि यह परियोजना केवल सड़क निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह गुजरात के आदिवासी और पिछड़े क्षेत्रों के सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का आधार बनेगी। उन्होंने बताया कि एनएच-56 एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय राजमार्ग है, जो राजस्थान के निम्बाहेड़ा से शुरू होकर गुजरात और मध्य प्रदेश के कई महत्वपूर्ण जिलों से गुजरते हुए वापी के पास एनएच-48 से जुड़ता है। यह मार्ग न केवल राज्यों के बीच संपर्क का प्रमुख माध्यम है, बल्कि व्यापार, पर्यटन और क्षेत्रीय विकास के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण है।

इस परियोजना के अंतर्गत जिन खंडों को चार लेन में विकसित किया जाएगा, वे गुजरात के नर्मदा, दाहोद, छोटा उदेपुर, तापी और भरूच जैसे आदिवासी बहुल जिलों से होकर गुजरते हैं। इन क्षेत्रों में अब तक बुनियादी ढांचे की कमी के कारण विकास की गति धीमी रही है। सड़क विस्तार के बाद इन क्षेत्रों को बेहतर परिवहन सुविधा मिलेगी, जिससे स्थानीय लोगों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के नए अवसर खुलेंगे। बेहतर सड़क नेटवर्क से ग्रामीण क्षेत्रों के उत्पाद बड़े बाजारों तक आसानी से पहुंच सकेंगे, जिससे किसानों और छोटे व्यापारियों की आय में वृद्धि होगी।

यह परियोजना पर्यटन क्षेत्र के लिए भी एक बड़ा वरदान साबित होगी। एनएच-56 से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित केवडिया गांव में विश्व प्रसिद्ध स्टैच्यू ऑफ यूनिटी स्थित है, जो देश और दुनिया के पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण केंद्र बन चुका है। सड़क के चार लेन बनने से पर्यट allowing smoother and faster access to this iconic destination. इससे पर्यटन गतिविधियों में तेजी आएगी और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। होटल, रेस्टोरेंट, ट्रांसपोर्ट और अन्य सेवाओं से जुड़े क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियां बढ़ेंगी, जिससे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। परियोजना को आधुनिक मानकों के अनुसार डिजाइन किया गया है, जिसमें वाहनों की अधिकतम गति 100 किलोमीटर प्रति घंटा रखी गई है और औसत गति 70 किलोमीटर प्रति घंटा रहने का अनुमान है। वर्तमान में इस मार्ग पर यात्रा करने में लगभग 2.5 घंटे का समय लगता है, लेकिन परियोजना पूरी होने के बाद यह समय घटकर केवल 1.5 घंटे रह जाएगा। इससे न केवल समय की बचत होगी, बल्कि ईंधन की खपत भी कम होगी और परिवहन लागत में कमी आएगी। तेज और सुरक्षित परिवहन व्यवस्था से व्यापार और लॉजिस्टिक्स सेक्टर को भी बड़ा लाभ मिलेगा। इस परियोजना का एक और महत्वपूर्ण पहलू रोजगार सृजन है। निर्माण कार्य के दौरान लगभग 19.38 लाख मानव-दिवस का प्रत्यक्ष रोजगार और 22.82 लाख मानव-दिवस का अप्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न होने का अनुमान है। इसके अलावा परियोजना पूरी होने के बाद आसपास के क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि के कारण स्थायी रोजगार के नए अवसर भी पैदा होंगे। सड़क किनारे नए औद्योगिक और व्यावसायिक केंद्र विकसित होने की संभावना है, जिससे स्थानीय युवाओं को अपने ही क्षेत्र में रोजगार मिल सकेगा और पलायन की समस्या कम होगी।

सरकार का मानना है कि मजबूत सड़क नेटवर्क किसी भी क्षेत्र के विकास की रीढ़ होता है। बेहतर सड़कें न केवल लोगों को जोड़ती हैं, बल्कि वे आर्थिक गतिविधियों को भी गति देती हैं। इस परियोजना के माध्यम से गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों से जोड़ने में मदद मिलेगी। इससे क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा मिलेगा और औद्योगिक विकास की नई संभावनाएं खुलेंगी।

यह परियोजना देश की समग्र विकास नीति का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य सभी क्षेत्रों को समान रूप से विकसित करना है। केंद्र सरकार बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता दे रही है और देशभर में सड़क, रेल, हवाई और जलमार्ग नेटवर्क को मजबूत किया जा रहा है। एनएच-56 का चार लेन विस्तार इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो गुजरात के आदिवासी और पिछड़े क्षेत्रों को विकास की नई दिशा देगा।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह परियोजना केवल एक सड़क निर्माण परियोजना नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का माध्यम बनेगी। बेहतर कनेक्टिविटी से शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच आसान होगी, जिससे लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा। साथ ही व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा मिलने से क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

सरकार का यह निर्णय इस बात का संकेत है कि देश के दूरदराज और आदिवासी क्षेत्रों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं। एनएच-56 का चार लेन विस्तार गुजरात के लिए एक नई शुरुआत साबित होगा और आने वाले वर्षों में यह परियोजना क्षेत्र के विकास की तस्वीर बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। यह कदम न केवल सड़क परिवहन को आधुनिक बनाएगा, बल्कि लाखों लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का माध्यम भी बनेगा।

परीक्षाओं की पवित्रता और विद्यार्थियों की सुरक्षा के लिए वडोदरा में अभूतपूर्व सुरक्षा व्यवस्था, ICSE-ISC परीक्षा अवधि में सख्त

(जीएनएस)। गुजरात के शैक्षणिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण शहर वडोदरा में इस वर्ष आयोजित होने जा रही ICSE और ISC बोर्ड परीक्षाओं को शांतिपूर्ण, सुरक्षित और निष्पक्ष वातावरण में संपन्न कराने के उद्देश्य से प्रशासन ने व्यापक और सख्त सुरक्षा इंतजाम लागू कर दिए हैं। Council for the Indian School Certificate Examinations, नई दिल्ली द्वारा आयोजित इन प्रतिष्ठित परीक्षाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए स्थानीय प्रशासन और पुलिस विभाग ने यह सुनिश्चित करने का संकल्प लिया है कि किसी भी प्रकार की अव्यवस्था, अनुचित गतिविधि या तकनीकी बाधा परीक्षा प्रक्रिया को प्रभावित न कर सके। इसी क्रम में Vadodara City Police Commissionerate ने एक विशेष अधिसूचना जारी करते हुए परीक्षा अवधि के दौरान कई महत्वपूर्ण प्रतिबंधों और दिशा-निर्देशों को लागू करने की घोषणा की है।

प्रशासन द्वारा जारी आदेश के अनुसार ICSE, अर्थात कक्षा 10 की परीक्षा 17 फरवरी 2026 से 30 मार्च 2026 तक आयोजित की जाएगी, जबकि ISC, अर्थात कक्षा 12 की परीक्षा 12 फरवरी 2026 से 6 अप्रैल 2026 तक निर्धारित की गई है। इन परीक्षाओं का आयोजन शहर के निर्दिष्ट परीक्षा केंद्र पर किया जाएगा, जहां हजारों छात्र-छात्राएं अपने भविष्य को आकार देने वाले इस महत्वपूर्ण चरण से गुजरेंगे। ऐसे में प्रशासन का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि परीक्षा के दौरान किसी भी छात्र को भय, दबाव, शोर या अव्यवस्था का सामना न करना पड़े और वे पूरी एकाग्रता के साथ अपनी परीक्षा दे सकें।

पुलिस कमिश्नरेट द्वारा जारी आदेश में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि परीक्षा केंद्र के भीतर किसी भी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को ले जाने पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। इसमें मोबाइल फोन, स्मार्टवॉच, ब्लूटूथ डिवाइस, कैमरा, लैपटॉप, टैबलेट या कोई भी अन्य वायरलेस उपकरण शामिल हैं। यह प्रतिबंध न केवल परीक्षार्थियों पर लागू होगा, बल्कि परीक्षा केंद्र में प्रवेश करने वाले किसी भी व्यक्ति, चाहे वह कर्मचारी हो या अन्य अधिकारी, सभी पर समान रूप से लागू होगा। इस कदम का मुख्य उद्देश्य परीक्षा की गोपनीयता और निष्पक्षता को बनाए रखना है, ताकि किसी भी प्रकार की नकल, सूचना लीक या तकनीकी दुरुपयोग की संभावना को पूरी तरह समाप्त किया जा सके।

इसके साथ ही परीक्षा केंद्र के आसपास के क्षेत्र में भी विशेष सतर्कता बरती जाएगी। पुलिस ने परीक्षा केंद्र के 100 मीटर के दायरे में चार या उससे अधिक लोगों के एकत्र होने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है। यह निर्णय इस उद्देश्य से लिया गया है कि परीक्षा केंद्र के बाहर किसी भी प्रकार की भीड़, हंगामा या अवांछित गतिविधि न हो, जिससे परीक्षार्थियों का ध्यान भटक सकता है या उनकी मानसिक शांति प्रभावित हो सकती है।

सोना-चांदी के वायदा के भाव में परस्पर विरुद्ध चालः सोना वायदा 765 रुपये तेज, चांदी वायदा 7380 रुपये लुढ़का

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर 6 से 12 फरवरी के सप्ताह के दौरान कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस में 1894910.47 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 275929.11 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 1618962.23 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का फरवरी वायदा 39262 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 43576.82 करोड़ रुपये का हुआ। आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 208470.65 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा सप्ताह के आरंभ में 149396 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 160250 रुपये और नीचे में 149396 रुपये पर पहुंचकर, 152071 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 765 रुपये या 0.5 फीसदी बढ़कर 152836 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 535 रुपये या 0.43 फीसदी गिरकर 124977 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 40 रुपये या 0.26 फीसदी की मजबूती के साथ 15678 रुपये प्रति 1 ग्राम बंद हुआ। सोना-मिनी मार्च वायदा 148889 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 157879 रुपये और नीचे में 148000 रुपये पर पहुंचकर, सप्ताह के अंत में 372 रुपये या 0.25 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 150688 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम 152401 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 160350 रुपये और नीचे में 151532 रुपये पर पहुंचकर, 153847 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 184 रुपये या 0.12 फीसदी गिरकर 153663 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा सप्ताह के आरंभ में 234063 रुपये के भाव पर खूलकर, 269373 रुपये के उच्च और 229187 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 243815 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 7380 रुपये या 3.03 फीसदी की गिरावट के साथ 236435 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 8647 रुपये या 3.43 फीसदी घटकर 243324 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 8378 रुपये या 3.33 फीसदी गिरकर सप्ताह के अंत में 243467 रुपये प्रति किलो हुआ।

▶▶ क्रूड ऑयल वायदा 60 रुपये फिसला : कमोडिटी वायदाओं में 275929 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 1618962 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 208470 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 39262 पॉइंट के स्तर परबुलडेक्स फ्यूचर्स 38070 पॉइंट के स्तर पर

मेटल वर्ग में 34968.18 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 21.7 रुपये या 1.77 फीसदी औंधकर 1206.3 रुपये प्रति किलो पर बंद हुआ। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 3.1 रुपये या 0.97 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट सप्ताह के अंत में 323.35 रुपये प्रति किलो पर बंद हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 40 पैसे या 0.13 फीसदी बढ़कर 307.7 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि सीसा फरवरी वायदा 1.85 रुपये या 0.98 फीसदी की गिरावट के साथ सप्ताह के अंत में 187.8 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 32409.17 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 5738 रुपये के भाव पर खूलकर, 5976 रुपये के उच्च और 5648 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 60 रुपये या 1.04 फीसदी लुढ़ककर 5686 रुपये प्रति बैरल बंद हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा 58 रुपये या 1.01 फीसदी गिरकर सप्ताह के अंत में 5689 रुपये प्रति बैरल के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 316.8 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 332.4 रुपये के उच्च और 278.1 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 317.3 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 23.1 रुपये या 7.28 फीसदी लुढ़ककर 294.2 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बंद हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 22.6 रुपये या 7.13 फीसदी औंधकर 294.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर बंद हुआ।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 983.7 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के अंत में 16.9 रुपये या 1.72 फीसदी गिरकर 966.6 रुपये प्रति किलो हुआ।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान सोना के विभिन्न अनुबंधों में 118235.96 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 90234.69 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 28779.82 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 2091.10 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 155.27 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 3941.99 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 12037.49 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 20247.73 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

सप्ताह के अंत में ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 7914 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 46625 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 15374 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 204049 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 29825 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 6252 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 11110 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 32165 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 9990 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 14591 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स फरवरी वायदा 36702 पॉइंट पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 39999 के उच्च और 36700 के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 1789 पॉइंट बढ़कर 39262 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ।